2 समुएल

[illegible]

2 समुएल की किताब उसके मुसन्निफ़ की पहचान नहीं करती — इसका मुसन्निफ़ नबी समुएल नहीं हो सकता क्यूंकि वह मर चुका था असलियत में 1 समुएल और 2 समुएल एक ही कताब थे जिन सत्तर या बहतर लोगों ने पुराने अहदनामे के यूनानी तर्ज़ का तरजुमा किया था उन्होंने इसको दो किताबों में तक़्सीम किया साऊल की मौत के साथ पहली किताब के ख़तम होने के बाद से लेकर दाउद की हुकूमत के आगाज़ के साथ दूसरी किताब शुरू हुई यह बयान करते हुए कि किस तरह दाउद यहूदिया का बादशाह बना और बाद में तमाम इस्राईल का।

[illegible]

इस किताब के तसनीफ़ की तारीख़ तकरीबन 1050 - 722 कबल मसीह है।

इस को बाबुल की गुलामी के दौरान इसतिसना की तारीख़ का एक हिस्सा बतौर लिखा गया।

[illegible]

एक तरह से देखा जाये तो इस किताब के असल नाज़रीन व क़ारिईन बनी इस्राईल रहे हैं जो दाऊद और सुलेमान के हुकूमत की रिआया और कामयाब नस्ल थी।

[illegible]

2 समुएल की किताब दाउद बादशाह की हुकूमत का कलमबन्द है यह किताब दाउद की स्याक — ए — इबारत में उसके अहद की जगह रखता है — दाउद यरूशलेम को इस्राईल का सियासी और मज़हबी मरकज़ बनाता है — 2 समुएल 5:6 — 12; 6:1 — 17 यहोवा का कलाम (2 समुएल 7:4 — 16) और दाउद के कौल

(2 समुएल 23:1 — 17) यह दोनों ख़ुदा की दी हुई बादशाही की
अहमियत पर दबाव डालते है मसीह की हज़ारसाला बादशाही
की नबुव्वत बतौर इशारा किया गया है।

[illegible]

इतिहाद

बैरूनी ख़ाका

1. दाउद की बादशाही का उरुज — 1:1-10:19
2. दाउद की बादशाही का उरूज — 11:1-20:26
3. ज़मीमा — 21:1-24:25

[illegible]

1 और साऊल की मौत के बा'द जब दाऊद अमालीक़ियों को
मार कर लौटा और दाऊद को सिक़लाज में रहते हुए दो दिन हो
गए।
2 तो तीसरे दिन ऐसा हुआ कि एक शख़्स लश्करगाह में से
साऊल के पास से अपने लिबास को फाड़े और सिर पर ख़ाक डाले
हुए आया और जब वह दाऊद के पास पहुँचा तो ज़मीन पर गिरा
और सिज्दा किया।
3 दाऊद ने उससे कहा, "तू कहाँ से आता है?" उसने उससे कहा,
"मैं इस्राईल की लश्करगाह में से बच निकला हूँ।"
4 तब दाऊद ने उससे पूछा, "क्या हाल रहा? ज़रा मुझे बता।"
उसने कहा कि "लोग जंग में से भाग गए, और बहुत से गिरे मर
गए और साऊल और उसका बेटा यूनतन भी मर गये हैं।"
5 तब दाऊद ने उस जवान से जिसने उसको यह ख़बर दी कहा,
"तुझे कैसे मा'लूम है कि साऊल और उसका बेटा यूनतन मर
गये?"
6 वह जवान जिसने उसको यह ख़बर दी कहने लगा कि मैं कूह
— ए — जिलबू'आ पर अचानक पहुँच गया और क्या देखा कि

साऊल अपने नेज़ह पर झुका हुआ है रथ और सवार उसका पीछा
किए आ रहे हैं।
7 और जब उसने अपने पीछे नज़र की तो मुझको देखा और
मुझे पुकारा, मैंने जवाब दिया "मैं हाज़िर हूँ।"
8 उसने मुझे कहा तू कौन है? मैंने उसे जवाब दिया मैं
अमालीक़ी हूँ।
9 फिर उसने मुझसे कहा, मेरे पास खड़ा होकर मुझे क़त्ल कर
डाल क्यूँकि मैं बड़े तकलीफ़ में हूँ और अब तक मेरी जान मुझ में
है।
10 तब मैंने उसके पास खड़े होकर उसे क़त्ल किया क्यूँकि मुझे
यक़ीन था कि अब जो वह गिरा है तो बचेगा नहीं और मैं उसके
सिर का ताज और बाज़ू पर का कंगन लेकर उनको अपने ख़ुदावन्द
के पास लाया हूँ।
11 तब दाऊद ने अपने कपड़ों को पकड़ कर उनको फाड़ डाला
और उसके साथ सब आदमियों ने भी ऐसा ही किया।
12 और वह साऊल और उसके बेटे यूनतन और ख़ुदावन्द के
लोगों और इस्राईल के घराने के लिये मातम करने लगे और रोने
लगे और शाम तक रोज़ा रखा इसलिए कि वह तलवार से मारे
गये थे।
13 फिर दाऊद ने उस जवान से जो यह ख़बर लाया था पूछा
कि "तू कहाँ का है?" उसने कहा, "मैं एक परदेसी का बेटा और
'अमालीक़ी हूँ।"
14 दाऊद ने उससे कहा, "तू ख़ुदावन्द के ममसूह को हलाक
करने के लिए उस पर हाथ चलाने से क्यूँ न डरा?"
15 फिर दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा, "नज़दीक जा
और उसपर हमला कर।" इसलिए उसने उसे ऐसा मारा कि वह
मर गया।
16 और दाऊद ने उससे कहा, "तेरा ख़ून तेरे ही सिर पर हो

क्यूँकि तू ही ने अपने मुँह से ख़ुद अपने ऊपर गवाही दी। और
कहा कि मैंने ख़ुदावन्द के ममसूह को जान से मारा।”

[illegible]

17 और दाऊद ने साऊल और उसके बेटे यूनतन पर इस मर्सिया
के साथ मातम किया।
18 और उसने उनको हुक्म दिया कि बनी यहूदाह को कमान का
गीत सिखायें। देखो वह *याशर की किताब में लिखा है।
19 “ए इस्राईल! तेरे ही ऊँचे मक़ामों पर तेरा ग़ुरूर मारा गया,
हाय! पहलवान कैसे मर गए।
20 यह जात में न बताना, अस्क़लोन की गलियों में इसकी ख़बर
न करना, ऐसा न हो कि फ़िलिस्तियों की बेटियाँ ख़ुश हों, ऐसा न
हो कि नामख़्तूनों की बेटियाँ ग़ुरूर करें।
21 ऐ जिलबू'आ के पहाड़ों! तुम पर न ओस पड़े और न बारिश
हो और न हदिया की चीज़ों के खेत हों, क्यूँकि वहाँ पहलवानों की
ढाल बुरी तरह से फेंक दी गई, या'नी साऊल की ढाल जिस पर
तेल नहीं लगाया गया था।
22 मक़तूलों के ख़ून से ज़बरदस्तों की चर्बी से यूनतन की कमान
कभी न टली, और साऊल की तलवार ख़ाली न लौटी।
23 साऊल और यूनतन अपने जीते जी अज़ीज़ और दिल
पसन्द थे और अपनी मौत के वक़्त अलग न हुए, वह 'उक़ाबों
से तेज़ और शेर बबरों से ताक़त वर थे।
24 हे इस्राईली औरतों, साऊल के लिए रोओ, जिसने तुमको
अच्छे अच्छे अर्ग़वानी लिबास पहनाए और सोने के ज़ेवरों से
तुम्हारे लिबास को आरास्ता किया।
25 हाय! लड़ाई में पहलवान कैसे मर गये! यूनतन तेरे ऊँचे
मक़ामों पर क़त्ल हुआ।

* **1:18** आशरकी किताब: यह किताब जो ग़ालिबनक़दीम जंग के गानों का मजमुआ था जिस का हवाला यशौ 10:13 में भी है यह इब्रानी लफ्ज़ है, आशर के मायने हैं, सीधा या खरा

26 ऐ मेरे भाई यूनतन! मुझे तेरा ग़म है, तू मुझको बहुत ही
प्यारा था, तेरी मुहब्बत मेरे लिए 'अजीब थी, औरतों की मुहब्बत
से भी ज़्यादा।
27 हाय, पहलवान कैसे मर गये और जंग के हथियार बरबाद
हो गये।"

2

1 और इसके बा'द ऐसा हुआ कि दाऊद ने ख़ुदावन्द से पूछा कि
"क्या मैं यहूदाह के शहरों में से किसी में चला जाऊँ।" ख़ुदावन्द ने
उस से कहा, "ज़ा।" दाऊद ने कहा, किधर जाऊँ "उस ने फ़रमाया,
हब्रून को।"
2 इसलिए दाऊद अपनी दोनों बीवियों यज़र'एली अख़नूअम
और कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल के साथ वहाँ गया।
3 और दाऊद अपने साथ के आदमियों को भी एक एक घराने
समेत वहाँ ले गया और वह हब्रून के शहरों में रहने लगे।
4 तब यहूदाह के लोग आए और वहाँ उन्होंने दाऊद को मसह
करके यहूदाह के ख़ानदान का बादशाह बनाया, और उन्होंने
दाऊद को बताया कि यबीस जिल'आद के लोगों ने साऊल को
दफ़न किया था।
5 इसलिए दाऊद ने यबीस जिल'आद के लोगों के पास क़ासिद
रवाना किए और उनको कहला भेजा कि ख़ुदावन्द की तरफ़ से
तुम मुबारक हो इसलिए कि तुमने अपने मालिक साऊल पर यह
एहसान किया और उसे दफ़न किया।
6 इसलिए ख़ुदावन्द तुम्हारे साथ रहमत और सच्चाई को
अमल में लाये और मैं भी तुमको इस नेकी का बदला दूँगा इसलिए
कि तुमने यह काम किया है।
7 तब तुम्हारे बाज़ू ताक़तवर हों और तुम दिलेर रहो क्यूँकि
तुम्हारा मालिक साऊल मर गया और यहूदाह के घराने ने मसह
कर के मुझे अपना बादशाह बनाया है।

8 लेकिन नेर के बेटे अबनेर ने जो साऊल के लशकर का
सरदार था साऊल के बेटे *इश्बोसत को लेकर उसे महनायम में
पहुँचाया।
9 और उसे जिल'आद और आशरयों और यज़र'एल और
इफ़्राईम और बिनयामीन और तमाम इस्राईल का बादशाह
बनाया।
10 और साऊल के बेटे इश्बोसत की उम्र चालीस बरस की थी
जब वह इस्राईल का बादशाह हुआ और उसने दो बरस बादशाही
की लेकिन यहूदाह के घराने ने दाऊद की पैरवी की।
11 और दाऊद हब्रून में बनी यहूदाह पर सात बरस छ: महीने
तक हाकिम रहा।
12 फिर नेर का बेटा अबनेर और साऊल के बेटे इश्बोसत के
ख़ादिम महनायम से जिब'ऊन में आए।
13 और †ज़रोयाह का बेटा योआब और दाऊद के मुलाज़िम
निकले और जिब'ऊन के तालाब पर उनसे मिले और दोनों अलग
अलग बैठ गये, एक तालाब की इस तरफ़ और दूसरा तालाब की
दूसरी तरफ़।
14 तब अबनेर ने योआब से कहा, ज़रा यह जवान उठकर हमारे
सामने एक दूसरे का मुक़ाबला करें, योआब ने कहा "ठीक।"
15 तब वह उठकर ता'दाद के मुताबिक़ आमने सामने हुए या'नी
साऊल के बेटे इश्बोसत और बिनयामीन की तरफ़ से बारह जवान
और दाऊद के ख़ादिमों में से बारह आदमी।
16 और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़ कर अपनी अपनी
तलवार अपने मुख़ालिफ़ के पेट में भोंक दी, इसलिए वह एक

---

* **2:8** वह इश्बोसेथ कहलाता है, इस किताब के 2 — 4 अबवाब में 14 बार इसका नाम आया है — मगर वह 1 तवारीख़ 8:33 और 9:39 में एश्बाल भी कहलाता है और 1 समुएल 14:49 में इश्वी कहकर आया है, हो सकता है यह इसी नाम का दूसरा तलफ़्फ़ुज़हो, यह किसी तरह से यकीनी है कि इस के नाम का तलफ़्फ़ुज़ ईश्बाल एश्बाल था जिस के मायने हैं बाल का शख़्स या "बाल मौजूद है" † **2:13** ज़रुयाहयुआब की माँ थी

ही साथ गिरे इसलिए वह जगह हल्क़त हस्सोरीम कहलाई वह
जिब'ऊन में है।
17 और उस रोज़ बड़ी सख़्त लड़ाई हुई और अबनेर और
इस्राईल के लोगों ने दाऊद के ख़ादिमों से शिकस्त खाई।
18 और ज़रोयाह के तीनों बेटे योआब, और अबीशै और
असाहील वहाँ मौजूद थे और असाहील जंगली हिरन की तरह
दौड़ता था।
19 और असाहील ने अबनेर का पीछा किया और अबनेर का
पीछा करते वक़्त वह दहने या बाएं हाथ न मुड़ा।
20 तब अबनेर ने अपने पीछे नज़र करके उससे कहा, ऐ
असाहील क्या तू है। उसने कहा, हाँ।
21 अबनेर ने उससे कहा, "अपनी दहनी या बायीं तरफ़ मुड़ जा
और जवानों में से किसी को पकड़ कर उसके हथियार लूट ले।"
लेकिन 'असाहेल उसका पीछा करने से बाज़ न आया।
22 अबनेर ने असाहील से फिर कहा, "मेरा पीछा करने से बाज़
रह मैं कैसे तुझे ज़मीन पर मार कर डाल दूँ क्यूँकि फिर मैं तेरे भाई
योआब को क्या मुँह दिखाऊंगा।"
23 इस पर भी उसने मुड़ने से इनकार किया, अबनेर ने अपने
भाले के पिछले सिरे से उसके पेट पर ऐसा मारा कि वह पार हो
गया तब वह वहाँ गिरा और उसी जगह मर गया और ऐसा हुआ
कि जितने उस जगह आए जहाँ 'असाहील गिर कर मरा था वह
वहीं खड़े रह गये।
24 लेकिन योआब और अबीशै अबनेर का पीछा करते रहे और
जब वह कोह — ए — अम्मा जो दश्त — ए — जिबऊन के रास्ते
में जियाह के मुक़ाबिल है पहुँचे तो सूरज डूब गया।
25 और बनी बिनयमीन अबनेर के पीछे इकट्ठे हुए और एक
झुण्ड बन गए और एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए।
26 तब अबनेर ने योआब को पुकार कर कहा, "क्या तलवार

हमेशा तक हलाक करती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका
अंजाम कड़वाहट होगा? तू कब लोगों को हुक्म देगा कि अपने
भाइयों का पीछा छोड़ कर लौट जायें।”
27 योआब ने कहा, “ज़िन्दा ख़ुदा की क़सम अगर तू न बोला
होता तो लोग सुबह ही को ज़रूर चले जाते और अपने भाइयों
का पीछा न करते।”
28 फिर योआब ने नरसिंगा फूँका और सब लोग ठहर गये और
इस्राईल का पीछा फिर न किया और न फिर लड़े
29 और अबनेर और उसके लोग उस ‡सारी रात मैदान चले,
और यरदन के पार हुए, और सब बितारोन से गुज़र कर महनायम
में आ पहुँचे।
30 और योआब अबनेर का पीछा छोड़ कर लौटा, और उसने
जो सब आदमियों को जमा' किया, तो दाऊद के मुलाज़िमो में से
उन्नीस आदमी और 'असाहील कम निकले।
31 लेकिन दाऊद के मुलाज़िमों ने बिनयमीन में से और अबनेर
के लोगों में से इतने मार दिए कि तीन सौ साठ आदमी मर गये।
32 और उन्होंने 'असाहील को उठा कर उसे उसके बाप की क़ब्र
में जो बैतलहम में थी दफ़न किया और योआब और उसके लोग
सारी रात चले और हब्रून पहुँच कर उनको दिन निकला।

3

1 असल में साऊल के घराने और दाऊद के घराने में मुद्दत तक
जंग रही और दाऊद रोज़ ब रोज़ ताक़तवर होता गया और साऊल
का ख़ानदान कमज़ोर होता गया।

??????? ??? ????? ?? ?? ????? ????? ?????

2 और हब्रून में दाऊद के यहाँ बेटे पैदा हुए, अमनून उसका
पहलौठा था, जो यज़र ऐली अख़नूअम के बतन से था।

‡ **2:29** पुरे सुबह तक

3 और दूसरा किलयाब था जो कर्मिली नाबाल की बीवी
अबीजेल से हुआ, तीसरा अबीसलोम था जो जसूर के बादशाह
तल्मी की बेटी मा'का से हुआ।
4 चौथा अदूनियाह था जो हज्जीत का बेटा था और पाँचवाँ
सफतियाह जो अबीताल का बेटा था।
5 और छठा इत्रि'आम था जो दाऊद की बीवी 'इज्लाह से हुआ,
यह दाऊद के यहाँ हब्रून में पैदा हुआ।
6 और जब साऊल के घराने और दाऊद के घराने में जंग हो रही
थी, तो अबनेर ने साऊल के घराने में ख़ूब ज़ोर पैदा कर लिया।
7 और साऊल के एक बाँदी थी जिसका नाम रिस्फ़ाह था, वह
अय्याह की बेटी थी इसलिए इश्बोसत ने अबनेर से कहा, "तू मेरे
बाप की बाँदी के पास क्यूँ गया?"
8 अबनेर इश्बोसत की इन बातों से बहुत ग़ुस्सा होकर कहने
लगा, "क्या मैं यहूदाह के किसी कुत्ते का सिर हूँ? आज तक मैं तेरे
बाप साऊल के घराने और उसके भाइयों और दोस्तों से मेहरबानी
से पेश आता रहा हूँ और तुझे दाऊद के हवाले नहीं किया, तो भी
तू आज इस 'औरत के साथ मुझ पर 'ऐब लगाता है।
9 ख़ुदा अबनेर से वैसा ही बल्कि उससे ज़्यादा करे अगर मैं
दाऊद से वही सुलूक न करूँ जिसकी क़सम ख़ुदावन्द ने उसके
साथ खाई थी।
10 ताकि हुकूमत को साऊल के घराने से हटा कर के दाऊद
के तख़्त को इस्राईल और यहूदाह दोनों पर दान से बैरसबा' तक
क़ाईम करूँ।"
11 और वह अबनेर को एक लफ़्ज़ जवाब न दे सका इसलिए
कि उससे डरता था।
12 और अबनेर ने अपनी तरफ़ से दाऊद के पास क़ासिद रवाना
किए और कहला भेजा कि "मुल्क किसका है? तू मेरे साथ अपना
'अहद बाँध और देख मेरा हाथ तेरे साथ होगा ताकि सारे इस्राईल

को तेरी तरफ़ मायल करूँ।"
13 उसने कहा, "अच्छा मैं तेरे साथ 'अहद बाधूँगा पर मैं तुझसे
एक बात चाहता हूँ और वह यह है कि जब तू मुझसे मिलने को
आए तो जब तक साऊल की बेटी मीकल को पहले अपने साथ
न लाये तू मेरा मुँह देखने नहीं पाएगा।"
14 और दाऊद ने साऊल के बेटे इश्बोसत को क़ासिदों कि
ज़रिए' कहला भेजा कि "मेरी बीवी मीकल को जिसको मैंने
फ़िलिस्तियों की सौ खलड़ियाँ देकर ब्याहा था मेरे हवाले कर।"
15 इसलिए इश्बोसत ने लोग भेज कर उसे उसके शौहर लैस
के बेटे फ़लतीएल से छीन लिया।
16 और उसका शौहर उसके साथ चला, और उसके पीछे पीछे
बहुरीम तक रोता हुआ चला आया, तब अबनेर ने उससे कहा,
"लौट जा।" इसलिए वह "लौट गया।"
17 और अबनेर ने इस्राईली बुज़ुर्गों के पास ख़बर भेजी, "गुज़रे
दिनों में तुम यह चाहते थे कि दाऊद तुम पर बादशाह हो।
18 तब अब ऐसा करलो, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने दाऊद के हक़
में फ़रमाया है कि मैं अपने बन्दा दाऊद के ज़रिए' अपनी क़ौम
इस्राईल को फ़िलिस्तियों और उनके सब दुश्मनों के हाथ से रिहाई
दूँगा।"
19 और अबनेर ने बनी बिनयमीन से भी बातें कीं और अबनेर
चला कि जो कुछ इस्राईलियों और बिनयमीन के सारे घराने को
अच्छा लगा उसे हब्रून में दाऊद को कह सुनाये।
20 इसलिए अबनेर हब्रून में दाऊद के पास आया और बीस
आदमी उसके साथ थे तब दाऊद ने अबनेर और उन लोगों की
जो उसके साथ थे मेहमान नवाज़ी की।
21 अबनेर ने दाऊद से कहा, "अब में उठकर जाऊँगा और
सारे इस्राईल को अपने मालिक बादशाह के पास इकट्ठा करूँगा
ताकि वह तुझसे अहद बाँधे और तू जिस जिस पर तेरा जी चाहे
हुकूमत करे।" इसलिए दाऊद ने अबनेर को रुखसत किया और

वह सलामत चला गया।

[illegible]

22 दाऊद के लोग और योआब किसी जंग से लूट का बहुत सा
माल अपने साथ लेकर आए: लेकिन अबनेर हबरून में दाऊद
के पास नहीं था, क्यूँकि उसे उसने रुख़सत कर दिया था और वह
सलामत चला गया था।
23 और जब योआब और लश्कर के सब लोग जो उसके साथ
थे आए तो उन्होंने योआब को बताया कि "नेर का बेटा अबनेर
बादशाह के पास आया था और उसने उसे रुख़्सत कर दिया और
वह सलामत चला गया।"
24 तब योआब बादशाह के पास आकर कहने लगा, "यह तूने
क्या किया? देख! अबनेर तेरे पास आया था, इसलिए तूने उसे
क्यूँ रुख़्सत कर दिया कि वह निकल गया?
25 तू नेर के बेटे अबनेर को जानता है कि वह तुझको धोका देने
और तेरे आने जाने और तेरे सारे काम का राज़ लेने आया था।"
26 जब योआब दाऊद के पास से बाहर निकला तो उसने अबनेर
के पीछे क़ासिद भेजे और वह उसको सीरह के कुँवें से लौटा ले
आए, लेकिन यह दाऊद को मा'लूम नहीं था।
27 जब अबनेर हब्रून में लौट आया तो योआब उसे अलग
फाटक के अन्दर ले गया, ताकि उसके साथ चुपके चुपके बात
करे, और वहाँ अपने भाई 'असाहील के ख़ून के बदले में उसके पेट
में ऐसा मारा कि वह मर गया।
28 बाद में जब दाऊद ने यह सुना तो कहा कि "मैं और मेरी
हुकूमत दोनों हमेशा तक ख़ुदावन्द के आगे नेर के बेटे अबनेर के
ख़ून की तरफ़ से बे गुनाह हैं।
29 वह योआब और उसके बाप के सारे घराने के सिर लगे, और
योआब के घराने में कोई न कोई ऐसा होता रहे जिसे जरयान हो
या कोढ़ी या बैसाखी पर चले या तलवार से मरे या टुकड़े टुकड़े
को मोहताज हों।"

30 इसलिए योआब और उसके भाई अबीशै ने अबनेर को मार
दिया इसलिए कि उसने जिब'ऊन में उनके भाई 'असाहेल को
लड़ाई में क़त्ल किया था
31 और दाऊद ने योआब से और उन सब लोगों से जो उसके
साथ थे कहा कि "अपने कपड़े फाड़ो और टाट पहनो और अबनेर
के आगे आगे मातम करो।" और दाऊद बादशाह ख़ुद जनाज़े के
पीछे पीछे चला।
32 और उन्होंने अबनेर को हब्रून में दफ़न किया और बादशाह
अबनेर की क़ब्र पर ज़ोर ज़ोर से रोया और सब लोग भी रोए।
33 और बादशाह ने अबनेर पर मर्सिया कहा, "क्या अबनेर को
ऐसा ही मरना था जैसे बेवकूफ़ मरता है?
34 तेरे हाथ बंधे न थे और न तेरे पाँव बेड़ियों में थे, जैसे कोई
बदकारों के हाथ से मरता है वैसे ही तू मारा गया।" तब उसपर
सब लोग दोबारह रोए।
35 और सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए
लेकिन दाऊद ने क़सम खाकर कहा, "अगर मैं सूरज के ग़ुरूब होने
से पहले रोटी या और कुछ चखूँ तो ख़ुदा मुझ से ऐसा बल्कि इससे
ज़्यादा करे।"
36 और सब लोगों ने इस पर ग़ौर किया और इससे ख़ुश हुए
क्यूँकि जो कुछ बादशाह करता था सब लोग उससे ख़ुश होते थे।
37 तब सब लोगों ने और तमाम इस्राईल ने उसी दिन जान
लिया कि नेर के बेटे अबनेर का क़त्ल होना बादशाह की तरफ़ से
न था।
38 और बादशाह ने अपने मुलाज़िमों से कहा, "क्या तुम नहीं
जानते हो कि आज के दिन एक सरदार बल्कि एक बहुत बड़ा
आदमी इस्राईल में मरा है?
39 और अगर्चे मैं मम्सूह बादशाह हूँ तो भी आज के दिन बेबस हूँ
और यह लोग बनी ज़रोयाह मुझसे ताक़तवर हैं ख़ुदावन्द बदकारों
को उसकी गुनाह के मुताबिक़ बदला दे।"

4

□□□□□□□□ □□ □□□□

1 जब साऊल के बेटे इश्बोसत ने सुना कि अबनेर हब्रून में मर
गया तो उसके हाथ ढीले पड़ गए, और सब इस्राईली घबरा गए।
2 और साऊल के बेटे इश्बोसत के दो आदमी थे जो फ़ौजों के
सरदार थे, एक का नाम बा'ना और दूसरे का रेकाब था, यह दोनों
बिनयमीन की नसल के बैरूती रिम्मोंन के बेटे थे, क्यूँकि बैरूत भी
बनी बिनयमीन का गिना जाता है।
3 और बैरूती जित्तीम को भाग गए थे चुनाँचे आज के दिन तक
वह वहीं रहते हैं।
4 और साऊल के बेटे यूनतन का एक लंगड़ा बेटा था, जब
साऊल और यूनतन की ख़बर यज़र'एल से पहुँची तो एह पाँच
बरस का था, तब उसकी दाया उसको उठा कर भागी और और
उसने जो भागने में जल्दी की तो ऐसा हुआ कि वह गिर पड़ा और
वह लंगड़ा हो गया उसका नाम मिफ़ीबोसत था।
5 और बैरूती रिम्मोन के बेटे रेकाब और बा'ना चले और कड़ी
धूप के वक़्त इश्बोसत के घर आए जब दोपहर को आराम कर रहा
था।
6 तब वह वहाँ घर के अन्दर गेंहूँ लेने के बहाने से घुसे और उसके
पेट में मारा और रेकाब और उसका भाई बा'ना भाग निकले। *
7 †‡जब वह घर में घुसे तो वह अपनी आरामगाह में अपने
बिस्तर पर सोता था, तब उन्होंने उसे मारा और क़त्ल किया और
उसका सिर काट दिया और उसका सिर लेकर तमाम रात मैदान
की राह चले।
8 और इश्बोसत का सिर हब्रून में दाऊद के पास ले आए और
बादशाह से कहा, "तेरा दुश्मन साऊल जो तेरी जान का तालिब

* **4:6** गेहूं फटकते वक़्तऔरत जो दरवाज़े पर थी वह ऊंघने लगी थी और वह सो गयी थी, सो रकाब और बआना फिसल गए, उन्हों ने इश्बोसेथ को पेट में मारा और उसे क़त्ल किया, फिर वह वहां से बच कर निकल गए † **4:7** यरदन ‡ **4:7** अराबह

था यह उसके बेटे इश्बोसत का सिर है, इसलिए ख़ुदावन्द ने आज
के दिन मेरे मालिक बादशाह का बदला साऊल और उसकी नसल
से लिया।"
9 तब दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बा'ना को बैरूती रिममोन
के बेटे थे जवाब दिया कि "ख़ुदावन्द की हयात की क़सम जिसने
मेरी जान को हर मुसीबत से रिहाई दी है।
10 जब एक शख़्स ने मुझसे कहा कि देख साऊल मर गया और
समझा कि ख़ुशख़बरी देता है तो मैंने उसे पकड़ा और सिक़लाज में
उसे क़त्ल किया यही सज़ा मैंने उसे उसकी ख़बर के बदले दिया।
11 तब जब बदकारों ने एक सच्चे इंसान को उसी के घर में उसके
बिस्तर पर क़त्ल किया है, तो क्या मैं अब उसके ख़ून का बदला
तुमसे ज़रूर न लूँ और तुमको ज़मीन पर से मिटा न डालूँ?"
12 तब दाऊद ने अपने जवानों को हुक्म दिया, और उन्होंने
उनको क़त्ल किया और उनके हाथ और पाँव काट डाले, और
उनको हब्रून में तालाब के पास टाँग दिया और इश्बोसत के सिर
को लेकर उन्होंने हब्रून में अबनेर की क़ब्र में दफ़न किया।

5

[illegible]

1 तब इस्राईल के सब क़बीले हब्रून में दाऊद के पास आकर
कहने लगे, "देख हम तेरी हड्डी और तेरा गोश्त हैं।
2 और गुज़रे ज़माने में जब साऊल हमारा बादशाह था, तो
तू ही इस्राईलियों को ले जाया और ले आया करता था: और
ख़ुदावन्द ने तुझसे कहा कि तू मेरे इस्राईली लोगों की गल्ला
बानी करेगा और तू इस्राईल का सरदार होगा।"
3 ग़र्ज़ इस्राईल के सब बुज़ुर्ग हब्रून में बादशाह के पास आए
और दाऊद बादशाह ने हब्रून में उनके साथ ख़ुदावन्द के सामने
'अहद बाँधा और उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्राईल का
बादशाह बनाया।

4 और दाऊद जब हुकूमत करने लगा तो तीस बरस का था और
उसने चालीस बरस बादशाहत की।
5 उसने हब्रून में सात बरस छ: महीने यहूदाह पर हुकूमत
की और येरूशलेम में सब इस्राईल और यहूदाह पर तैंतीस बरस
बादशाहत की।

[illegible]

6 फिर बादशाह और उसके लोग येरूशलेम को यबूसियों पर
जो उस मुल्क के बाशिंदे थे चढ़ाई करने लगे, उन्होंने दाऊद से
कहा, "जब तक तू अंधों और लंगड़ों को न ले जाए यहाँ नहीं आने
पायेगा।" वह समझते थे कि दाऊद यहाँ नहीं आ सकता है।
7 तो भी दाऊद ने सिय्यून का क़िला' ले लिया, वही दाऊद का
शहर है।
8 और दाऊद ने उस दिन कहा कि "जो कोई यबूसियों को मारे
वह नाले को जाए और उन लंगड़ों और अंधों को मारे जिन से
दाऊद के दिल को नफ़रत है।" इसी लिए यह कहावत है कि "अंधे
और लंगड़े वहाँ हैं, इसलिए *वह घर में नहीं आ सकता।"
9 और दाऊद उस क़िला' में रहने लगाऔर उसने उसका नाम
दाऊद का शहर रखा और दाऊद ने चारों तरफ़ मिल्लो से लेकर
अन्दर के रुख़ तक बहुत कुछ ता'मीर किया।
10 और दाऊद बढ़ता ही गया क्यूँकि ख़ुदावन्द लश्करों का ख़ुदा
उसके साथ था।
11 और सूर के बादशाह हेरान ने क़ासिदों को और देवदार की
लकड़ियों और बढ़इयों और राजगीरों को दाऊद के पास भेजा और
उन्होंने दाऊद के लिए एक महल बनाया।
12 और दाऊद को यक़ीन हुआ कि ख़ुदावन्द ने उसे इस्राईल
का बादशाह बनाकर क़यास बख़्शा, और उसने उसकी हुकूमत को
अपनी क़ौम इस्राईल की ख़ातिर मुम्ताज़ किया है।

* **5:8** यह्वे का महल, महल

13 और हब्रून से चले आने के बाद दाऊद ने येरूशलेम से और
बाँदियाँ रख लीं और बीवियाँ कीं और दाऊद के यहाँ और बेटे
बेटियाँ पैदा हुई।
14 और जो येरूशलेम में उसके यहाँ पैदा हुए, उनके नाम यह
हैं सम्मू'आ, और सोबाब और नातन और सुलेमान।
15 और इबहार और इलिसू'अ और नफ़ज और यफ़ी'।
16 और इलीसमा' और इलीयदा और इलिफ़ालत।
17 और जब फ़िलिस्तियों ने सुना कि उन्होंने दाऊद को मसह
करके इस्राईल का बादशाह बनाया है, तो सब फ़िलिस्ती दाऊद
की तलाश में चढ़ आए और दाऊद को ख़बर हुई, तब वह क़िला'
में चला गया।
18 और फ़िलिस्ती आकर रिफ़ाईम की वादी में फ़ैल गये।
19 तब दाऊद ने ख़ुदा से पू छा, "क्या मैं फ़िलिस्तियों के
मुक़ाबला को जाऊँ? क्या तू उनको मेरे क़ब्ज़े में कर देगा?"
ख़ुदावन्द ने दाऊद से कहा कि "जा। क्यूँकि मैं ज़रूर फ़िलिस्तियों
को तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।"
20 फिर दाऊद बा'ल प्राज़ीम में आया और वहाँ दाऊद ने उनको
मारा और कहने लगा कि "ख़ुदावन्द ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने
तोड़ डाला जैसे पानी टूट कर बह निकलता है।" तब उसने उस
जगह का नाम बा'ल प्राज़ीम रखा।
21 और वहीं उन्होंने अपने बुतों को छोड़ दिया था तब दाऊद
और उसके लोग उनको ले गए।
22 और फ़िलिस्ती फिर चढ़ आए और रिफ़ाईम की वादी में फ़ैल
गये।
23 और जब दाऊद ने ख़ुदावन्द से पू छा तो उसने कहा, "तू
चढ़ाई न कर, उनके पीछे से घूम कर तूत के दरख़्तों के सामने से
उन पर हमला कर।
24 और जब तूत के दरख़्तों की फुन्गियों में तुझे फ़ौज के चलने
की आवाज़ सुनाई दे तो चुस्त हो जाना, क्यूँकि उस वक़्त ख़ुदावन्द

तेरे आगे आगे निकल चुका होगा, ताकि फ़िलिस्तियों के लश्कर
को मारे।"
25 और दाऊद ने जैसा ख़ुदावन्द ने उसे फ़रमाया था वैसा ही
किया और फ़िलिस्तियों को जिबा' से जज़र तक मारता गया।

6

[illegible]

1 और दाऊद ने फिर इस्राईलियों के सब चुने हुए तीस हज़ार
मर्दों को जमा' किया।
2 और दाऊद उठा और सब लोगों को जो उसके साथ थे लेकर
बा'ला यहूदाह से चला ताकि ख़ुदा के संदूक़ को उधर से ले आए,
जो उस नाम का या'नी रब्ब — उल — अफ़्वाज के नाम का
कहलाता है, जो करूबियों पर बैठता है।
3 तब उन्होंने ख़ुदा के संदूक़ को नई गाड़ी पर रखा और उसे
अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था निकाल लाये, और उस नई
गाड़ी को अबीनदाब के बेटे उज़्ज़ह और अख़ियो हाँकने लगे।
4 और वह उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था ख़ुदा के
संदूक़ के साथ निकाल लाये, और अख़ियो संदूक़ के आगे आगे
चल रहा था।
5 और दाऊद और इस्राईल का सारा घराना सनोबर की लकड़ी
के सब तरह के साज़ और सितार बरबत और दफ़ और ख़न्जरी
और झाँझ ख़ुदावन्द के आगे आगे बजाते चले।
6 और जब वह नकोन के खलियान पर पहुँचे तो उज़्ज़ह ने ख़ुदा
के संदूक़ की तरफ़ हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्यूँकि बैलों ने
ठोकर खाई थी।
7 तब ख़ुदावन्द का ग़ुस्सा उज़्ज़ह पर भड़का और ख़ुदा ने वहीं
उसे उसकी ख़ता की वजह से मारा, और वह वहीं ख़ुदा के संदूक़
के पास मर गया।

8 और दाऊद इस वजह से कि ख़ुदा उज़्ज़ह पर टूट पड़ा नाख़ुश
हुआ, और उसने उस जगह का नाम परज़ उज़्ज़ह रख्खा जो आज
के दिन तक है।
9 और दाऊद उस दिन ख़ुदावन्द से डर गया और कहने लगा
कि "ख़ुदावन्द का संदूक़ मेरे यहाँ क्यूँकर आए?"
10 और दाऊद ने ख़ुदावन्द के संदूक़ को अपने यहाँ, दाऊद
के शहर में ले जाना न चाहा, बल्कि दाऊद उसे एक तरफ़ जाती
'ओबेदअदूम के घर ले गया।
11 और ख़ुदावन्द का संदूक़ जाती ओबेदअदूम के घर में तीन
महीने तक रहा और ख़ुदावन्द ने ओबेदअदूम को और उसके सारे
घराने को बरकत दी।
12 और दाऊद बादशाह को ख़बर मिली कि ख़ुदावन्द ने
'ओबेदअदूम के घराने को और उसकी हर चीज़ में ख़ुदा के संदूक़
की वजह से बरकत दी है, तब दाऊद गया और ख़ुदा के संदूक़ को
'ओबेदअदूम के घर से दाऊद के शहर में ख़ुशी ख़ुशी ले आया।
13 और ऐसा हुआ कि जब ख़ुदावन्द के संदूक़ के उठाने वाले
छ: क़दम चले तो दाऊद ने एक बैल और एक मोटा बछड़ा ज़बह
किया।
14 और दाऊद ख़ुदावन्द के सामनेअपने सारे ज़ोर से नाचने
लगा, और दाऊद कतान का अफ़ूद पहने था।
15 तब दाऊद और इस्राईल का सारा घराना ख़ुदावन्द के संदूक़
को ललकारते और नरसिंगा फूँकते हुए लाये।

[illegible]

16 और जब ख़ुदावन्द का संदूक़ दाऊद के शहर के अन्दर आ
रहा था, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की से निगाह की और
दाऊद बादशाह को ख़ुदावन्द के सामने उछलते और नाचते देखा,
तब उसने अपने दिल ही दिल में हक़ीर जाना।

17 और वह ख़ुदा के संदूक़ को अन्दर लाये और उसे उसकी
जगह पर उस ख़ेमा के बीच जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया
था रख्खा, और दाऊद ने सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और सलामती की
क़ुर्बानियाँ ख़ुदावन्द के आगे पेश कीं।
18 और जब दाऊद सोख़्तनी क़ुर्बानी और सलामती की
क़ुर्बानियाँ पेश कर चुका, तो उसने रब्बुल अफ़्वाज के नाम से
लोगों को बरकत दी।
19 और उसने सब लोगों या'नी इस्राईल के सारे जमा'त के मर्दों
और 'औरतों दोनों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोश्त
और किशमिश की एक एक टिकया बाँटी, फिर सब लोग अपने
अपने घर चले गये।
20 तब दाऊद लौटा ताकि अपने घराने को बरकत दे और
साऊल की बेटी मीकल दाऊद के इस्तक़बाल को निकली और
कहने लगी कि "इस्राईल का बादशाह आज कैसा शानदार मा'लूम
होता था जिसने आज के दिन अपने मुलाज़िमों की लौंडियों के
सामने अपने को नंगा किया जैसे कोई नौजवान बेहयाई से नंगा
हो जाता है।"
21 दाऊद ने मीकल से कहा, "यह तो ख़ुदावन्द के सामने था
जिसने तेरे बाप और उसके सारे घराने को छोड़ कर मुझे पसन्द
किया, ताकि वह मुझे ख़ुदावन्द की क़ौम इस्राईल का रहनुमा
बनाये, इसलिए मैं ख़ुदावन्द के आगे नाचूँगा।
22 बल्कि मैं इससे भी ज़्यादा ज़लील हूँगा और अपनी ही नज़र
में नीच हूँगा और जिन लौंडियों का ज़िक्र तूने किया है वहीं मेरी
इज़्ज़त करेंगी।"
23 इसलिए साऊल की बेटी मीकल मरते दम तक बे औलाद
रही।

7

1 जब बादशाह अपने महल में रहने लगा, और ख़ुदावन्द ने
उसे उसको चारों तरफ़ के सब दुश्मनों से आराम बख़्शा।
2 तो बादशाह ने नातन नबी से कहा, "देख मैं तो देवदार की
लकड़ियों के घर में रहता हूँ लेकिन ख़ुदावन्द का संदूक़ पर्दों के
अन्दर रहता है।"
3 तब नातन ने बादशाह से कहा। "जा जो कुछ तेरे दिल में है
कर क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरे साथ है।"
4 और उसी रात को ऐसा हुआ कि ख़ुदावन्द का कलाम नातन
को पहुँचा कि।
5 "जा और मेरे बन्दा दाऊद से कह, ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है
कि क्या तू मेरे रहने के लिए एक घर बनाएगा?
6 क्यूँकि जब से मैं बनी इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया
आज के दिन तक किसी घर में नहीं रहा, बल्कि ख़ेमा और मसकन
में फिरता रहा हूँ।
7 और जहाँ जहाँ मैं सब बनी इस्राईल के साथ फिरता रहा, क्या
मैं ने कहीं किसी इस्राईली *क़बीले से जिसे मैंने हुक्म किया कि
मेरी क़ौम इस्राईल की गल्ला बानी करो यह कहा कि तुमने मेरे
लिए देवदार की लकड़ियों का घर क्यों नहीं बनाया?
8 इसलिए अब तू मेरे बन्दा दाऊद से कहा कि रब्बुल अफ़्वाज
यूँ फ़रमाता है, कि मैंने तुझे भेड़साला से जहाँ तू भेड़ बकरियों
के पीछे पीछे फिरता था लिया, ताकि तू मेरी क़ौम इस्राईल का
रहनुमा हो।
9 और मैं जहाँ जहाँ तू गया तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों
को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं दुनिया के बड़े बड़े लोगों
के नाम की तरह तेरा नाम बड़ा करूँगा।
10 और मैं अपनी क़ौम इस्राईल के लिए एक जगह मुक़र्रर
करूँगा, और वहाँ उनको जमाऊँगा ताकि वह अपनी ही जगह

* **7:7** रहनुमाओं, कबीला

बसें और फिर हटाये न जायें, और शरारत के फ़र्ज़न्द उनको फिर
दुख नहीं देने पायेंगे जैसा पहले होता था।
11 और जैसा उस दिन से होता आया, जब मैंने हुक्म दिया, कि
मेरी क़ौम इस्राईल पर क़ाज़ी हों और मैं ऐसा करूँगा, कि तुझको
तेरे सब दुश्मनों से आराम मिले इसके अलावा ख़ुदावन्द तुझको
बताता है कि †ख़ुदावन्द तेरे घरको बनाये रख्खेगा।
12 और जब तेरे दिन पूरे हो जायेंगे और तू अपने बाप दादा के
साथ मर जाएगा, तो मैं तेरे बाद तेरी नसल को जो तेरे सुल्ब से
होगी, खड़ा करके उसकी हुकूमत को क़ाईम करूँगा।
13 वही मेरे नाम का एक घर बनाएगा और मैं उसकी बादशाहत
का तख़्त हमेशा के लिए क़ाईम करूँगा।
14 और मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा, अगर
वह ख़ता करे तो मैं उसे आदमियों की लाठी और बनी आदम के
ताज़िया नों से नसीहत करूँगा।
15 लेकिन मेरी रहमत उससे जुदा न होगी, जैसे मैंने उसे
साऊल से जुदा किया जिसे मैंने तेरे आगे से हटा दिया।
16 और तेरा घर और तेरी बादशाहत हमेशा बनी रहेगी, तेरा
तख़्त हमेशा के लिए क़ाईम किया जायेगा।
17 जैसी यह सब बातें और यह सारा ख़्वाब था वैसा ही दाऊद
से नातन ने कहा।
18 तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर ख़ुदावन्द के आगे बैठा,
और कहने लगा, ऐ मालिक ख़ुदावन्द मैं कौन हूँ और मेरा घराना
क्या है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया।
19 तो भी ऐ मालिक ख़ुदावन्द यह तेरी नज़र में छोटी बात
थी क्यूँकि तूने अपने बन्दा के घराने के हक़ में बहुत मुद्दत तक
का ज़िक्र किया है और वह भी ऐ मालिक ख़ुदावन्द आदमियों के
तरीक़े पर।

---

† **7:11** तेरी नसल की पीड़ी मुसलसल हुकूमत करेगी

20 और दाऊद तुझसे और क्या कह सकता है? क्यूँकि ऐ
मालिक ख़ुदावन्द तू अपने बन्दा को जानता है।
21 तूने अपने कलाम की ख़ातिर और अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़
यह सब बड़े काम किए, ताकि तेरा बन्दा उनसे वाकिफ़ हो जाए।
22 इसलिए तू ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा, बुज़ुर्ग है, क्यूँकि जैसा हमने
अपने कानों से सुना है उसके मुताबिक़ कोई तेरी तरह नहीं और
तेरे 'अलावह कोई ख़ुदा नहीं।
23 और दुनिया में वह कौन सी एक क़ौम है जो तेरे लोगों या'नी
इस्राईल की तरह है, जिसे ख़ुदा ने जाकर अपनी क़ौम बनाने को
छुड़ाया, ताकि वह अपना नाम करे, और तुम्हारी ख़ातिर बड़े बड़े
काम और अपने मुल्क के लिए और अपनी क़ौम के आगे जिसे तूने
मिस्र की क़ौमों से और उनके मा'बूदों से रिहाई बख़्शी होलनाक
काम करे।
24 और तूने अपने लिए अपनी क़ौम बनी इस्राईल को मुक़र्रर
किया, ताकि वह हमेशा के लिए तेरी क़ौम ठहरे और तू ख़ुद ऐ
ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हुआ।
25 और अब तू ऐ ख़ुदावन्द उस बात को जो तूने अपने बन्दा
और उसके घराने के हक़ में फ़रमाई है, हमेशा के लिए क़ाईम करदे
और जैसा तूने फ़रमाया है वैसा ही कर।
26 और हमेशा यह कह कहकर तेरे नाम की बड़ाई की जाए,
कि रब्ब — उल — अफ़्वाज इस्राईल का ख़ुदा है और तेरे बन्दा
दाऊद का घराना तेरे सामने क़ाईम किया जाएगा।
27 क्यूँकि तूने ऐ रब्ब — उल — अफ़्वाज इस्राईल के ख़ुदा
अपने बन्दा पर ज़ाहिर किया, और फ़रमाया कि मैं तेरा घराना
बनाए रख्खूँगा, तब तेरे बन्दा के दिल में यह आया कि तेरे आगे
यह मुनाजात करे।
28 और ऐ मालिक ख़ुदावन्द तू ख़ुदा है और तेरी बातें सच्ची हैं,
और तूने अपने बन्दे से इस नेकी का वा'दा किया है।

29 इसलिए अब अपने बन्दा के घराने को बरकत देना मंज़ूर कर, ताकि वह हमेशा तेरे नज़दीक वफ़ादार रहे, कि तू ही ने ऐ मालिक ख़ुदावन्द यह कहा है, और तेरी ही बरकत से तेरे बन्दे का घराना हमेशा मुबारक रहे।”

8

[illegible]

1 इसके बाद दाऊद ने फ़िलिस्तियों को मारा, और उनको मग़लूब किया और दाऊद ने दारुल हुकूमत 'इनान फ़िलिस्तियों के हाथ से छीन ली।

2 और उसने मोआब को मारा और उनको ज़मीन पर लिटा कर रस्सी से नापा, तब उसने क़त्ल करने के लिए दो रस्सियों से नापा और जीता छोड़ने के लिए एक पूरी रस्सी से, यूँ मोआबी दाऊद के ख़ादिम बनकर हदिये लाने लगे।

3 और दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अज़र को भी जब वह दरिया — ए — फ़रात पर बादशाहत पर भी क़ब्ज़ा करने को जा रहा था मार लिया।

4 और दाऊद ने उसके एक हज़ार सात सौ सवार और बीस हज़ार पियादे पकड़ लिए और दाऊद ने रथों के सब घोड़ों की नालें काटीं पर उनमें से सौ रथों के लिए घोड़े बचा रख्खे।

5 और जब दमिश्क़ के अरामी ज़ोबाह के बादशाह हदद अज़र की मदद को आए तो दाऊद ने अरामियों के बाईस हज़ार आदमी क़त्ल किए।

6 जब दाऊद ने दमिश्क़ के आराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाईं तब अरामी भी दाऊद के ख़ादिम बन कर हदिये लाने लगे, और ख़ुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फ़तह बख़्शी।

7 और दाऊद ने हदद'अज़र के मुलाज़िमों की सोने की ढालें छीन लीं और उनको येरूशलेम में ले आया।

8 और दाऊद बादशाह बताह और बैरूती से जो हदद'अज़र के
शहर थे बहुत सा पीतल ले आया।
9 और जब हमात के बादशाह तूग़ी ने सुना कि दाऊद ने
हदद'अज़र का सारा लश्कर मार लिया।
10 तो तूग़ी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद बादशाह के पास
भेजा, कि उसे सलाम कहे और मुबारकबाद दे, इसलिए कि उसने
हदद'अज़र तूग़ी से लड़ा करता था और यूराम चाँदी और सोने
और पीतल के बरतन अपने साथ लाया।
11 और दाऊद बादशाह ने उनको ख़ुदावन्द के लिए मख़्सूस
किया, ऐसे ही उसने उनसब क़ौमों के सोने चाँदी को मख़्सूस किया
जिनको उसने मग़लूब किया था।
12 या'नी अरामियों और मोआबियों और बनी अम्मोन और
फ़िलिस्तियों और 'अमालीकियों के सोने चाँदी और ज़ोबाह के
बादशाह रहोब के बेटे हदद'अज़र की लूट को।
13 और दाऊद का बड़ा नाम हुआ जब वह नमक की वादी में
अरामियों के अठारह हज़ार आदमी मार कर लौटा।
14 और उसने अदोम में चौकियाँ बिठायीं बल्कि सारे अदोम
में चौकियाँ बिठायीं और सब अदूमी दाऊद के ख़ादिम बने और
ख़ुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फ़तह बख़्शी।
15 और दाऊद ने कुल इस्राईल पर बादशाहत की और दाऊद
अपनी सब र'इयत के साथ अदल — ओ — इन्साफ़ करता था
16 और ज़रोयाह का बेटा योआब लश्कर का सरदार था, और
अख़ीलूद का बेटा यहूसफ़त *मुवर्रिख़ था।
17 और अख़ीतोब का बेटा सदूक़ और अबीयातर का बेटा
अख़ीमलिक काहिन थे और सिरायाह मुंशी था।
18 और यहूयदाह का बेटा बनायाह करेतियों और फ़िलिस्तियों
का सरदार था, और दाऊद के बेटे †कहिन थे।

---

* **8:16** सरकारी रिकॉर्ड का लिखने वाला — शाही नुमाइन्दा † **8:18** काहिन लोग

9

[illegible]

1 फिर दाऊद ने कहा, "क्या साऊल के घराने में से कोई बाक़ी
है, जिस पर मैं यूनतन की ख़ातिर महेरबानी करूँ।"
2 और साऊल के घराने का एक ख़ादिम जिसका नाम ज़ीबा था,
उसे दाऊद के पास बुला लाये, बादशाह ने उससे कहा, "क्या तू
ज़ीबा है?" उसने कहा, "हाँ तेरा बन्दा वही है।"
3 तब बादशाह ने उससे कहा, "क्या साऊल के घराने में से कोई
नहीं रहता ताकि मैं उसपर ख़ुदा की तरह महेरबानी करूं?" ज़ीबा
ने बादशाह से कहा, "यूनतन का एक बेटा रह गया है जो लंगड़ा
है।"
4 तब बादशाह ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?" ज़ीबा ने बादशाह
को जवाब दिया, "देख वह लूदबार में अम्मी ऐल के बेटे मकीर के
घर में है।"
5 तब दाऊद बादशाह ने लोग भेज कर लूदबार से अम्मी ऐल
के बेटे मकीर के घर से उसे बुलवा लिया।
6 और साऊल के बेटे यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत दाऊद के
पास आया, और उसने मुँह के बल गिरकर सिज्दा किया, तब
दाऊद ने कहा, मिफ़ीबोसत! "उसने जवाब दिया, तेरा बन्दा
हाज़िर है।"
7 दाऊद ने उससे कहा, "मत डर क्यूँकि मैं तेरे बाप यूनतन की
ख़ातिर ज़रुर तुझ पर महेरबानी करूँगा, और तेरे बाप साऊल की
ज़मीन पर तुझे फेर दूँगा, और तू हमेशा मेरे दस्तरख़्वान पर खाना
खाया कर।"
8 तब उसने सिज्दा किया और कहा, "कि तेरा बन्दा है क्या
चीज़ जो तू मुझ जैसे मरे कुत्ते पर निगाह करे?"
9 तब बादशाह ने साऊल के ख़ादिम ज़ीबा को बुलाया और
उससे कहा कि "मैंने सब कुछ जो साऊल और उसके सारे घराने
का था तेरे आक़ा के बेटे को बख़्श दिया।

10 इसलिए तू अपने बेटों और नौकरों समेत ज़मीन को उसकी
तरफ़ से जोत कर पैदावार को ले आया कर ताकि तेरे आक़ा के
बेटे के खाने को रोटी हो पर मिफ़ीबोसत जो तेरे आक़ा का बेटा है
मेरे दस्तरख़्वान पर हमेशा खाना खायेगा।" और ज़ीबा के पन्दरह
बेटे और बीस नौकर थे।
11 तब ज़ीबा ने बादशाह से कहा, "जो कुछ मेरे मालिक
बादशाह ने अपने ख़ादिम को हुक्म दिया है तेरा ख़ादिम वैसा
ही करेगा।" लेकिन *मिफ़ीबोसत के हक़ में बादशाह ने फ़रमाया
कि वह मेरे दस्तरख़्वान पर इस तरह खाना खायेगा कि गोया वह
बादशाह जादों मेंसे एक है।
12 और मिफ़ीबोसत का एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका
था, और जितने ज़ीबा के घर में रहते थे वह सब मिफ़ीबोसत के
ख़ादिम थे।
13 इसलिए मिफ़ीबोसत येरूशलेम में रहने लगा, क्यूँकि वह
हमेशा बादशाह के दस्तरख़्वान पर खाना खाता था और वह दोनों
पाँव से लंगड़ा था।

10

[illegible]

1 इसके बाद ऐसा हुआ कि बनी अम्मोन का बादशाह मर गया
और उसका बेटा हनून उसका जानशीन हुआ।
2 तब दाऊद ने कहा कि "मैं नाहस के बेटे हनून के साथ
महेरबानी करूँगा, जैसे उसके बाप ने मेरे साथ महेरबानी की।"
तब दाऊद ने अपने ख़ादिम भेजे ताकि उनके ज़रिए' उसके बाप
के बारे में उसे तसल्ली दे, चुनाँचे दाऊद के ख़ादिम बनी अम्मोन
की सर ज़मीन पर आए।

* **9:11** मफ़िबूसित दाऊद के खाने की मेज़ पर उसके साथ लगातार खता रहा जैसे कि वह उसके अपने बेटों में से एक था —

3 बनी अम्मोन के सरदारों ने अपने मालिक हनून से कहा, “तुझे
क्या यह गुमान है कि दाऊद तेरे बाप की ता'ज़ीम करता है कि
उसने तसल्ली देने वाले तेरे पास भेजे हैं? क्या दाऊद ने अपने
ख़ादिम तेरे पास इसलिए नहीं भेजे हैं कि शहर का हाल दरयाफ़्त
करके और इसका भेद लेकर वह इसको बरबाद करे?”
4 तब हनून ने दाऊद के ख़ादिमों को पकड़ कर उनकी आधी
दाढ़ी मुंडवाई और उनकी लिबास बीच से सुरीन तक कटवा कर
उनको रूख़्सत कर दिया।
5 जब दाऊद को ख़बर पहुँची तो उसने उनसे मिलने को लोग
भेजे इसलिए यह आदमी बहुत ही शर्मिन्दा थे, इसलिए बादशाह
ने फ़रमाया कि “जब तक तुम्हारी दाढ़ी न बढ़े यरीहू में रहो, उसके
बाद चले आना।”
6 जब बनी अम्मोन ने देखा कि वह दाऊद के आगे ग़ुस्सा हो
गया तो बनी अम्मोन ने लोग भेजे और बैतरहोब के अरामियों
और ज़ूबाह के अरामियों में से बीस हज़ार पियादों को और मा'का
के बादशाह को एक हज़ार सिपाहियों समेत और तोब के बारह
हज़ार आदमियों को मज़दूरी पर बुलाया।
7 और दाऊद ने यह सुनकर योआब और बहादुरों के सारे लश्कर
को भेजा।
8 तब बनी अम्मोन निकले और उन्होंने फाटक के पास ही
लड़ाई के लिए सफ़ बाँधी और ज़ूबाह और रहोब के अरामी और
तोब और मा'का के लोग मैदान में अलग थे।
9 जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे दोनों तरफ़
लड़ाई के लिए सफ़ बंधी है तो उसने बनी इस्राईल के ख़ास लोगों
को चुन लिया और अरामियों के सामने उनकी सफ़ बाँधी।
10 और बाक़ी लोगों को अपने भाई अबीशै के हाथ सौंप दिया,
और उसने बनी अम्मोन के सामने सफ़ बाँधी।
11 फिर उसने कहा, अगर अरामी मुझ पर ग़ालिब होने लगें तो
तू मेरी मदद करना और अगर बनी अम्मोन तुझ पर ग़ालिब होने

लगें तो मैं आकर तेरी मदद करूँगा।
12 इसलिए ख़ूब हिम्मत रख और हम सब अपनी क़ौम और
अपने ख़ुदा के शहरों की ख़ातिर मर्दानगी करें और ख़ुदावन्द जो
बेहतर जाने वह करे।
13 तब योआब और वह लोग जो उसके साथ थे अरामियों पर
हमला करने को आगे बढ़े और वह उसके आगे भागे।
14 जब बनी अम्मोन ने देखा कि अरामी भाग गए तो वह भी
अबीशै के सामने से भाग कर शहर के अन्दर घुस गए, तब योआब
बनी अम्मोन के पास से लौट कर येरूशलेम में आया।
15 जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने इस्राईलियों से शिकस्त
खाई तो वह सब जमा' हुए।
16 और हदद'अज़र ने लोग भेजे और अरामियों को जो दरिया
— ए — फ़रात के पार थे ले आया और वह हिलाम में आए और
हदद'अज़र की फ़ौज का सिपह सालार सूबक उनका सरदार था।
17 और दाऊद को ख़बर मिली, इसलिए उसने सब इस्राईलियों
को इकट्ठा किया और यरदन के पार होकर हिलाम में आया और
अरामियों ने दाऊद के सामने सफ़ आराई की और उससे लड़े।
18 और अरामी इस्राईलियों के सामने से भागे और दाऊद ने
अरामियों के सात सौ रथों के आदमी और चालीस हज़ार सवार
क़त्ल कर डाले, और उनकी फ़ौज के सरदार सूबक को ऐसा मारा
कि वह वहीं मर गया।
19 और जब बादशाहों ने जो हदद'अज़र के ख़ादिम थे देखा कि
वह इस्राईलियों से हार गए, तो उन्होंने इस्राईलियों से सुलह कर
ली और उनकी ख़िदमत करने लगे, तब अरामी बनी अम्मोन की
फिर मदद करने से डरे।

11

????? ?? ????????

1 और ऐसा हुआ कि दूसरे साल जिस वक़्त बादशाह जंग
के लिए निकलते हैं, दाऊद ने योआब और उसके साथ अपने

ख़ादिमों और सब इस्राईलियों को भेजा, और उन्होंने बनी अम्मोन
को क़त्ल किया और रब्बा को जा घेरा पर दाऊद येरूशलेम ही में
रहा।
2 और शाम के वक़्त दाऊद अपने पलंग पर से उठकर बादशाही
महल की छत पर टहलने लगा, और छत पर से उसने एक 'औरत
को देखा जो नहा रही थी, और वह 'औरत निहायत ख़ूबसूरत थी।
3 तब दाऊद ने लोग भेजकर उस 'औरत का हाल दरयाफ़्त
किया, और किसी ने कहा, "क्या वह इलीआम की बेटी बतसबा
नहीं जो हित्ती ऊरिय्याह की बीवी है?"
4 और दाऊद ने लोग भेजकर उसे बुला लिया, वह उसके पास
आई और उसने उससे सोहबत की (क्यूँकि वह अपनी नापाकी से
पाक हो चुकी थी) फिर वह अपने घर को चली गई।
5 और वह औरत हाम्ला हो गई, तब उसने दाऊद के पास ख़बर
भेजी कि "मैं हाम्ला हूँ।"
6 और दाऊद ने योआब को कहला भेजा कि "हित्ती ऊरिय्याह
को मेरे पास भेज दे।" इसलिए योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद
के पास भेज दिया।
7 और जब ऊरिय्याह आया तो दाऊद ने पूछा कि योआब कैसा
है और लोगों का क्या हाल है और जंग कैसी हो रही है?
8 फिर दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा कि "अपने घर जा और
अपने पाँव धो।" और ऊरिय्याह बादशाह के महल से निकला और
बादशाह की तरफ़ से उसके पीछे पीछे एक ख़्वान भेजा गया। *

---

* **11:8** हो सकता है ऊरिया के लिए एक दा'वत हो ताकि एक लंबीसफ़र के बाद
मुंह हाथ धोकर खुद से ताज़ा दम होजाए क्योंकि वह धुल भरे रास्ते में वह सिर्फ़
चप्पलपहने हुए था (पैदायश 18:4, 19:2, 24:32, कुज़ात 19:21) दीगर मुफ़ससरीन
किसी तरह बयान करते हैं कि किन्हें सयाक़ — ए — इबारत में यह लुत्फ़ आफ़ीनी
का जिंसी तालुकात काहवाला देता है — जबकि लफ्ज़ पांव को भी कभी कभी आ'ज़ा
— ए — तनासुल के लिए कहा गया है, मिसाल बतोर देखें रूत 3:4, 7, 8; गज्लुल
गज्लियात5:3 — यह हर चाँद मुमकिन है कि दाऊद ने जानबूझ कर इस गुनाह को
अंजाम दिया हो और ऊरिया नेने इसे जिंसी तालुकात क़रार दिया हो —

9 लेकिन ऊरिय्याह बादशाह के घर के आस्ताना पर अपने
मालिक के और सब ख़ादिमों के साथ सोया और अपने घर न
गया।
10 और जब उन्होंने दाऊद को यह बताया कि "ऊरिय्याह
अपने घर नहीं गया। तो दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, क्या तू
सफ़र से नहीं आया? तब तू अपने घर क्यों नहीं गया?"
11 ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा कि "संदूक़ और इस्राईल और
यहूदाह झोंपड़ियों में रहते हैं और मेरा मालिक योआब और मेरे
मालिक के ख़ादिम खुले मैदान में डेरे डाले हुए हैं तो क्या मैं अपने
घर जाऊँ और खाऊँ पियूँ और अपनी बीवी के साथ सोऊँ? तेरी
हयात और तेरी जान की क़सम मुझसे यह बात न होगी।"
12 फिर दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा कि "आज भी तू यहीं रह
जा, कल मैं तुझे रवाना कर दूँगा।" इसलिए ऊरिय्याह उस दिन
और दूसरे दिन भी येरूशलेम में रहा।
13 और जब दाऊद ने उसे बुलाया तो उसने उसके सामने खाया
पिया और उसने उसे पिलाकर मतवाला किया और शाम को वह
बाहर जाकर अपने मालिक के और ख़ादिमों के साथ अपने बिस्तर
पर सो रहा पर अपने घर को न गया।
14 सुबह को दाऊद ने योआब के लिए ख़त लिखा और उसे
ऊरिय्याह के हाथ भेजा।
15 और उसने ख़त में यह लिखा कि "ऊरिय्याह को जंग में सबसे
आगे रखना और तुम उसके पास से हट जाना ताकि वह मारा जाए
और जाँ बहक़ हो।"
16 और यूँ हुआ कि जब योआब ने उस शहर का जाइज़ा कर
लिया तो उसने ऊरिय्याह को ऐसी जगह रख्खा जहाँ वह जानता
था कि बहादुर मर्द हैं।
17 और उस शहर के लोग निकले ओर योआब से लड़े और
वहाँ दाऊद के ख़ादिमों में से थोड़े से लोग काम आए और हित्ती
ऊरिय्याह भी मर गया।

18 तब योआब ने †आदमी भेज कर जंग का सब हाल दाऊद
को बताया।
19 और उसने क़ासिद को नसीहत कर दी कि "जब तू बादशाह
से जंग का सब हाल बयां कर चुके।
20 तब अगर ऐसा हो कि बादशाह को ग़ुस्सा आ जाये और वह
तुझसे कहने लगे कि तुम लड़ने को शहर के ऐसे नज़दीक क्यों चले
गये? क्या तुम नहीं जानते थे कि वह दीवार पर से तीर मारेंगे?
21 यरोब्बुसत के बेटे अबीमलिक को किसने मारा? क्या एक
'औरत ने चक्की का पात दीवार परसे उसके ऊपर ऐसा नहीं फेंका
कि वह तैबिज़ में मर गया? इसलिए तुम शहर की दीवार के
नज़दीक क्यों गये? तो फिर तू कहना कि तेरा ख़ादिम हित्ती
ऊरिय्याह भी मर गया।"
22 तब वह क़ासिद चला और आकर जिस काम के लिए योआब
ने उसे भेजा था वह सब दाऊद को बताया।
23 और उस क़ासिद ने दाऊद से कहा "कि वह लोग हमपर
ग़ालिब हुए और निकल कर मैदान में हमारे पास आगए, फिर
हम उनको दौड़ाते हुए फाटक के मदख़ल तक चले गये।
24 तब तीरंदाज़ों ने दीवार पर से तेरे ख़ादिमों पर तीर छोड़े,
इसलिए बादशाह के थोड़े ख़ादिम भी मरे और तेरा ख़ादिम हित्ती
ऊरिय्याह भी मर गया।"
25 तब दाऊद ने क़ासिद से कहा कि, "तू योआब से यूँ कहना
कि तुझे इस बात से ना ख़ुशी न हो इसलिए कि तलवार जैसा एक
को उड़ाती है वैसा ही दूसरे को, इसलिए तू शहर से और सख़्त
जंग करके उसे ढा दे और तू उसे हिम्मत देना।"
26 जब औरिय्याह की बीवी ने सुना कि उसका शौहर ऊरिय्याह
मर गया तो वह अपने शौहर के लिए मातम करने लगी।
27 और जब मातम के दिन गुज़र गए तो दाऊद ने बुलवाकर
उसको अपने महल में रख लिया और वह उसकी बीवी हो गई

† **11:18** क़ासिद

और उससे उसके एक लड़का हुआ पर उस काम से जिसे दाऊद ने
किया था ख़ुदावन्द नाराज़ हुआ।

12

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द ने नातन को दाऊद के पास भेजा, उसने उसके
पास आकर उससे कहा, "किसी शहर में दो शख़्स थे, एक अमीर
दूसरा ग़रीब।
2 उस अमीर के पास बहुत से रेवड़ और गल्ले थे।
3 लेकिन उस ग़रीब के पास भेड़ की एक पठिया के 'अलावा
कुछ न था, जिसे उसने ख़रीद कर पाला था और वह उसके और
उसके बाल बच्चों के साथ बढ़ी थी, वह उसी के नेवाले में से खाती
और उसके पियाला से पीती और उसकी गोद में सोती थी, और
उसके लिए बतौर बेटी के थी।
4 और उस अमीर के यहाँ कोई मुसाफ़िर आया, इसलिए उसने
उस मुसाफ़िर के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाने को अपने
रेवड़ और गल्ला में से कुछ न लिया, बल्कि उस ग़रीब की भेड़ ले
ली, और उस शख़्स के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाई।"
5 तब दाऊद का ग़ज़ब उस शख़्स पर बशिददत भड़का और
उसने नातन से कहा कि "ख़ुदावन्द की हयात की क़सम कि वह
शख़्स जिसने यह काम किया वाजिबुल क़त्ल है।
6 इसलिए उस शख़्स को उस भेड़ का चौ गुना भरना पड़ेगा
क्यूँकि उसने ऐसा काम किया और उसे तरस न आया।"
7 तब नातन ने दाऊद से कहा, "वह शख़्स तूही है, ख़ुदावन्द
इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने तुझे मसह करके इस्राईल
का बादशाह बनाया और मैंने तुझे साऊल के हाथ से छुड़ाया।
8 और मैंने तेरे आक़ा का घर तुझे दिया और तेरे आक़ा की
बीवियाँ तेरी गोद में करदीं, और इस्राईल और यहूदाह का घराना

तुझको दिया, और अगर यह सब कुछ थोड़ा था तो मैं तुझको
और और चीजें भी देता।
9 इसलिए तूने क्यों ख़ुदा की बात की तहक़ीर करके उसके
सामने बुराई की? तूने हित्ती ऊरिय्याह को तलवार से मारा
और उसकी बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी बने और उसको बनी
अम्मोन की तलवार से क़त्ल करवाया।
10 इसलिए अब तेरे घरसे तलवार कभी अलग न होगी क्यूँकि
तूने मुझे हक़ीर जाना और हित्ती ऊरिय्याह की बीवी लेली ताकि
वह तेरी बीवी हो।
11 इसलिए ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि देख मैं बुराई को तेरे
ही घर से तेरे ख़िलाफ़ उठाऊँगा और मैं तेरी बीवियों को लेकर
तेरी आँखों के सामने तेरे पड़ोसी को दूँगा, और वह दिन दहाड़े
तेरी बीवियों से सोहबत करेगा।
12 क्यूँकि तूने छिपकर यह किया लेकिन मैं सारे इस्राईल के
सामने दिन दहाड़े यह करूँगा।"
13 तब दाऊद ने नातन से कहा, "मैंने ख़ुदावन्द का गुनाह
किया।" नातन ने दाऊद से कहा कि "ख़ुदावन्द ने भी तेरा गुनाह
बख़्शा, तू मरेगा नहीं।
14 तोभी चूँकि तूने इस काम से ख़ुदावन्द के दुश्मनों को कुफ़्र
बकने का बड़ा मौ'क़ा दिया है इसलिए वह लड़का भी जो तुझसे
पैदा होगा मर जाएगा।"
15 फिर नातन अपने घर चला गया और ख़ुदावन्द ने उस लड़के
को जो ऊरिय्याह की बीवी के दाऊद से पैदा हुआ था मारा और
वह बहुत बीमार हो गया।
16 इसलिए दाऊद ने उस लड़के की ख़ातिर ख़ुदा से मिन्नत की
और दाऊद ने रोज़ा रखा और अन्दर जाकर सारी रात ज़मीन पर
पड़ा रहा।
17 और उसके घराने के बुज़ुर्ग उठकर उसके पास आए कि उसे
ज़मीन पर से उठायें पर वह न उठा और न उसने उनके साथ खाना

खाया।
18 और सातवें दिन वह लड़का मर गया और दाऊद के
मुलाज़िम उसे डर के मारे यह न बता सके कि लड़का मर गया,
क्यूँकि उन्होंने कहा कि "जब वह लड़का ज़िन्दा ही था और हमने
उससे बात की तो उसने हमारी बात न मानी तब अगर हम उसे
बतायें कि लड़का मर गया तो वह बहुत ही दुखी होगा।"
19 लेकिन जब दाऊद ने अपने मुलाज़िमों को आपस में
फुसफुसाते देखा तो दाऊद समझ गया कि लड़का मर गया,
इसलिए दाऊद ने अपने मुलाज़िमों से पूछा, "क्या लड़का मर
गया?" उन्होंने जवाब दिया, मर गया।
20 तब दाऊद ज़मीन पर से उठा और उसने ग़ुस्ल करके उसने
तेल लगाया और लिबास बदली और ख़ुदावन्द के घर में जाकर
सज्दा किया फिर वह अपने घर आया और उसके हुक्म देने पर
उन्होंने उसके आगे रोटी रखी और उसने खाई
21 तब उसके मुलाज़िमों ने उससे कहा, "यह कैसा काम है जो
तूने किया? जब वह लड़का जीता था तो तूने उसके लिए रोज़ा
रख्खा और रोता भी रहा और जब वह लड़का मर गया तो तूने
उठकर रोटी खाई।"
22 उसने कहा कि "जब तक वह लड़का ज़िन्दा था मैंने रोज़ा
रख्खा और मैं रोता रहा क्यूँकि मैंने सोचा क्या जाने ख़ुदावन्द को
मुझपर रहम आजाये कि वह लड़का जीता रहे?
23 लेकिन अब तो मर गया तब मैं किस लिए रोज़ा रखूँ? क्या
मैं उसे लौटा के ला सकता हूँ? मैं तो उसके पास जाऊँगा पर वह
मेरे पास नहीं लौटने का।"
24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत सबा'को तसल्ली दी और
उसके पास गया और उससे सोहबत की और उसके एक बेटा
हुआ और दाऊद ने उसका नाम सुलेमान रख्खा और ख़ुदावन्द
का प्यारा हुआ।
25 और उसने नातन नबी की ज़रिए पैग़ाम भेजा तब उसने

उसका नाम ख़ुदावन्द की ख़ातिर *यदीदियाह रख्खा।
26 और योआब बनी अम्मोन के रब्बा से लड़ा और उसने दारुल
हुकूमत को ले लिया।
27 और योआब ने क़ासिदों के ज़रिए दाऊद को कहला भेजा
कि "मैं रब्बा से लड़ा और मैंने पानियों के शहर को ले लिया।
28 फिर अब तू बाक़ी लोगों को जमा' कर और इस शहर के
नज़दीक ख़ेमा ज़न हो और इस पर क़ब्ज़ा कर ले ऐसा न हो कि
मैं इस शहर को बरबाद करूँ और वह मेरे नाम से कहलाए।"
29 तब दाऊद ने लोगों को जमा' किया और रब्बा को गया और
उससे लड़ा और उसे ले लिया।
30 और उसने उनके बादशाह का ताज उसके सर पर से उतार
लिया, उसका वज़न सोने का एक क़िन्तार था और उसमें जवाहर
जड़े हुए थे, फिर वह दाऊद के सर पर रख्खा गया और वह उस
शहर से लूट का बहुत सा माल निकाल लाया।
31 और उसने उन लोगों को जो उसमें थे बाहर निकाल कर
उनको आरों और लोहे के हैंगों और लोहे के कुल्हाड़ों के नीचे कर
दिया, और उनको ईंटों के पज़ावे में से चलवाया और उसने बनी
अम्मोन के सब शहरों से ऐसा ही किया, फिर दाऊद और सब लोग
येरूशलेम को लौट आए।

13

????? ?? ????????

1 और इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबीसलोम की
एक ख़ूबसूरत बहन थी, जिसका नाम तमर था, उस पर दाऊद का
बेटा अमनून आशिक़ हो गया।
2 और अमनून ऐसा कुढ़ने लगा कि वह अपनी बहन तमर की
वजह से बीमार पड़ गया, क्यूँकि वह कुँवारी थी इसलिए अमनून
को उसके साथ कुछ करना दुशवार मा'लूम हुआ।

* 12:25 मतलबयह्वे का अज़ीज़

3 और दाऊद के भाई सिमआ का बेटा यूनदब अमनून का दोस्त
था, और यूनदब बड़ा चालाक आदमी था।
4 फिर उसने उनसे कहा, "ऐ बादशाह ज़ादे! तू क्यूँ दिन ब दिन
दुबला होता जाता है? क्या तू मुझे नहीं बताएगा?" तब अमनून
ने उससे कहा कि "मैं अपने भाई अबीसलोम की बहन तमर पर
'आशिक़ हूँ।"
5 यूनदब ने उससे कहा, "तू अपने बिस्तर पर लेट जा और
बीमारी का बहाना कर ले और जब तेरा बाप तुझे देखने आए,
तो तू उससे कहना, मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मुझे
खाना दे और मेरे सामने खाना पकाये, ताकि मैं देखूँ और उसके
हाथ से खाऊँ।"
6 तब अमनून पड़ गया और उसने बीमारी का बहाना कर लिया
और जब बादशाह उसको देखने आया, तो अमनून ने बादशाह से
कहा, "मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मेरे सामने दो
पूरियाँ बनाये, ताकि मैं उसके हाथ से खाऊँ।"
7 तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि "तू अभी अपने
भाई अमनून के घर जा और उसके लिए खाना पका।"
8 फिर तमर अपने भाई अमनून के घर गई और वह बिस्तर पर
पड़ा हुआ था और उसने आटा लिया और गूँधा, और उसके सामने
पूरियाँ बनायीं और उनको पकाया।
9 और तवे को लिया और उसके सामने उनको उंडेल दिया,
लेकिन उसने खाने से इन्कार किया, तब अमनून ने कहा कि "सब
आदमियों को मेरे पास से बाहर कर दो।" तब हर एक आदमी
उसके पास से चला गया।
10 तब अमनून ने तमर से कहा कि "खाना कोठरी के अन्दर ले
आ ताकि मैं तेरे हाथ से खाऊँ।" इसलिए तमर वह पूरियाँ जो
उसने पकाई थीं उठा कर उनको कोठरी में अपने भाई अमनून के
पास लायी।

11 और जब वह उनको उसके नज़दीक ले गई कि वह खाए
तो उसने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, "ऐ मेरी बहन मुझसे
सोहबत कर।"
12 उसने कहा, "नहीं मेरे भाई मेरे साथ ज़बरदस्ती न कर
क्यूँकि इस्राईलियों में कोई ऐसा काम नहीं होना चाहिए, तू ऐसी
हिमाक़त न कर।
13 और भला मैं अपनी रुसवाई कहाँ लिए फिरूँगी? और तू
भी इस्राईलियों के बेवक़ूफ़ों में से एक की तरह ठहरेगा, इसलिए
तू बादशाह से दरख़्वास्त कर क्यूँकि वह मुझको तुझसे रोक नहीं
रख्खेगा।"
14 लेकिन उसने उसकी बात न मानी और चूँकि वह उससे
ताक़तवर था इसलिए उसने उसके साथ ज़बरदस्ती की, और उससे
सोहबत की।
15 फिर अमनून को उससे बड़ी सख़्त नफ़रत हो गई क्यूँकि
उसकी नफ़रत उसके जज़्ब — ए इश्क से कहीं बढ़कर थी,
इसलिए अमनून ने उससे कहा, "उठ चली जा।"
16 वह कहने लगी, "ऐसा न होगा क्यूँकि यह ज़ुल्म कि तू मुझे
निकालता है उस काम से जो तूने मुझसे किया बदतर है।" लेकिन
उसने उसकी एक न सुनी।
17 तब उसने अपने एक मुलाज़िम को जो उसकी ख़िदमत करता
था बुला कर कहा, "इस 'औरत को मेरे पास से बाहर निकाल दे
और पीछे दरवाज़े की चटकनी लगा दे।"
18 और वह रंग बिरंग जोड़ा पहने हुए थी क्यूँकि बादशाहों की
कुँवारी बेटियाँ ऐसी ही लिबास पहनती थीं फिर उसके ख़ादिम ने
उसको बाहर कर दिया और उसके पीछे चटकनी लगा दी
19 और तमर ने अपने सर पर ख़ाक डाली और अपने रंग बिरंग
के जोड़े को जो पहने हुए थी फाड़ लिया, और सर पर हाथ धर कर
रोती हुई चली।

20 उसके भाई अबीसलोम ने उससे कहा, "क्या तेरा भाई
अमनून तेरे साथ रहा है? ख़ैर ऐ मेरी बहन अब चुप हो रह क्यूँकि
वह तेरा भाई है और इस बात का ग़म न कर।" तब तमर अपने
भाई अबीसलोम के घर में बे बस पड़ी रही।
21 और जब दाऊद बादशाह ने यह सब बातें सुनी तो निहायत
ग़ुस्सा हुआ।
22 और अबीसलोम ने अपने भाई अमनून से कुछ बुरा भला
न कहा क्यूँकि अबीसलोम को अमनून से नफ़रत थी इसलिए कि
उसने उसकी बहन तमर के साथ ज़बरदस्ती किया था।
23 और ऐसा हुआ कि पूरे दो साल के बाद भेड़ों के बाल कतरने
वाले अबीसलोम के यहाँ बा'ल हसोर में थे जो इफ़्राईम के पास है
और अबीसलोम ने बादशाह के सब बेटों को दा'वत दी।
24 तब अबीसलोम बादशाह के पास आकर कहने लगा, "तेरे
ख़ादिम के यहाँ भेड़ों के बाल कतरने वाले आए हैं इसलिए मैं
मिन्नत करता हूँ कि बादशाह अपने मुलाज़िमों और अपने ख़ादिम
के साथ चले।"
25 तब बादशाह ने अबीसलोम से कहा, "नहीं मेरे बेटे हम सबके
सब न चलें ऐसा न हो कि तुझ पर हम बोझ हो जाएँ और वह उससे
बजिद हुआ तो भी वह न गया पर उसे दुआ दी।"
26 तब अबीसलोम ने कहा, अगर ऐसा नहीं हो सकता तो मेरे
भाई अमनून को तो हमारे साथ जाने दे "बादशाह ने उससे कहा,
वह तेरे साथ क्यों जाए?"
27 लेकिन अबीसलोम ऐसा बजिद हुआ कि उसने अमनून और
सब शहज़ादों को उसके साथ जाने दिया।
28 और अबीसलोम ने अपने ख़ादिमों को हुक्म दिया कि "देखो
जब अमनून का दिल मय से सुरूर में हो और मैं तुम को कहूँ कि
अमनून को मारो तो तुम उसे मार डालना खौफ़ न करना, क्या
मैंने तुमको हुक्म नही दिया? हिम्मतवर और बहादुर बने रहो।"

29 चुनाँचे अबीसलोम के नौकरों ने अमनून से वैसा ही किया
जैसा अबीसलोम ने हुक्म दिया था, तब सब शहज़ादे उठे और हर
एक अपने खच्चर पर चढ़ कर भागा।
30 और वह अभी रास्ते ही में थे कि दाऊद के पास यह ख़बर
पहुँची कि "अबीसलोम ने सब शहज़ादों को क़त्ल कर डाला है
और उनमें से एक भी बाक़ी नहीं बचा।"
31 तब बादशाह ने उठकर अपने लिबास को फाड़ा और ज़मीन
पर गिर पड़ा और उसके सब मुलाज़िम लिबास फाड़े हुए उसके
सामने खड़े रहे।
32 तब दाऊद के भाई सिमआ का बेटा यूनदब कहने लगा कि
"मेरा मालिक यह ख़्याल न करे, कि उन्होंने सब जवानों को जो
बादशाह ज़ादे हैं मार डाला है इसलिए कि सिर्फ़ अमनून ही मरा
है, क्यूँकि अबीसलोम के इन्तिज़ाम से उसी दिन से यह बात ठान
ली गई थी जब उसने उसकी बहन तमर के साथ ज़बरदस्ती की
थी।
33 इसलिए मेरा मालिक बादशाह ऐसा ख़्याल करके कि सब
शहज़ादे मर गये इस बात का ग़म न करे क्यूँकि सिर्फ़ अमनून ही
मरा है।"
34 और अबीसलोम भाग गया और उस जवान ने जो निगहबान
था अपनी आँखें उठाकर निगाह की और क्या देखा कि बहुत से
लोग उसके पीछे की तरफ़ से पहाड़ के किनारे के रास्ते से चले आ
रहे हैं।
35 तब यूनदब ने बादशाह से कहा कि "देख शहज़ादे आ गए
जैसा तेरे ख़ादिम ने कहा था वैसा ही है।"
36 उसने अपनी बात ख़त्म ही की थी कि शहज़ादे आ पहुँचे और
ज़ोर ज़ोर से रोने लगे और बादशाह और उसके सब मुलाज़िम भी
ज़ोर ज़ोर से रोए।
37 लेकिन अबीसलोम भाग कर जसूर के बादशाह 'अम्मीहूद

के बेटे तल्मी के पास चला गया और दाऊद हर रोज़ अपने बेटे के
लिए मातम करता रहा।
38 इसलिए अबीसलोम भाग कर जसूर को गया और तीन बरस
तक वहीं रहा।
39 और दाऊद बादशाह के दिल में अबीसलोम के पास जाने की
बड़ी आरज़ू थी क्यूँकि अमनून की तरफ़ से उसे तसल्ली हो गई
थी इसलिए कि वह मर चुका था।

14

[illegible]

1 और ज़रोयाह के बेटे योआब ने जान लिया कि बादशाह का
दिल अबीसलोम की तरफ़ लगा है।
2 तब योआब ने तक़ू'अ को आदमी भेज कर वहाँ से एक
'अक़्लमन्द 'औरत बुलवाई और उससे कहा कि "ज़रा सोग वाली
सा भेस करके मातम के कपड़े पहन ले, और तेल न लगा बल्कि
ऐसी 'औरत की तरह बन जा, जो बड़ी मुद्दत से मुर्दा के लिए
मातम कर रही हो।
3 और बादशाह के पास जाकर उससे इस तरह कहना। फिर
योआब ने जो बातें कहनी थीं सिखायीं।
4 और जब तक़ू'अ की वह 'औरत बादशाह से बातें करने लगी,
तो ज़मीन पर औंधे मुँह होकर गिरी और सिज्दा करके कहा, ऐ
बादशाह तेरी दुहाई है!।"
5 बादशाह ने उससे कहा, "तुझे क्या हुआ?" उसने कहा, "मैं
सच मुच एक बेवा हूँ और मेरा शौहर मर गया है।
6 तेरी लौंडी के दो बेटे थे, वह दोनों मैदान पर आपस में मार
पीट करने लगे, और कोई न था जो उनको छुड़ा देता, इसलिए
एक ने दूसरे को ऐसी मार लगाई कि उसे मार डाला।
7 और अब देख कि सब कुम्बे का कुम्बा तेरी लौंडी के ख़िलाफ़
उठ खड़ा हुआ है, और वह कहते हैं, कि उसको जिसने अपने भाई

को मारा हमारे हवाले कर ताकि हम उसको उसके भाई की जान
के बदले, जिसे उसने मार डाला क़त्ल करें, और यूँ वारिस को भी
हलाक कर दें, इस तरह वह मेरे अंगारे को जो बाक़ी रहा है बुझा
देंगे, और मेरे शौहर का न तो नाम न बक़िया रू — ए — ज़मीन
पर छोड़ेंगे।"
8 बादशाह ने उस 'औरत से कहा, "तू अपने घर जा और मैं तेरे
बारे में हुक्म करूँगा।"
9 तक़ू'अ की उस 'औरत ने बादशाह से कहा, "ऐ मेरे मालिक!
ऐ बादशाह! सारा गुनाह मुझ पर और मेरे बाप के घराने पर हुआ
और बादशाह और उसका तख़्त बे गुनाह रहे।"
10 तब बादशाह ने फ़रमाया, "जो कोई तुझसे कुछ कहे उसे
मेरे पास ले आना और फिर वह तुझको छूने नहीं पायेगा।"
11 तब उसने कहा कि "मैं 'अर्ज़ करती हूँ कि बादशाह ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा को याद करे, कि ख़ून का बदला लेने वाला और हलाक
न करने पाए, ऐसा न हो कि वह मेरे बेटे को हलाक कर दें" उसने
जवाब दिया, "ख़ुदावन्द की हयात की क़सम तेरे बेटे का एक बाल
भी ज़मीन पर नहीं गिरने पायेगा।"
12 तब उस 'औरत ने कहा, "ज़रा मेरे मालिक बादशाह से तेरी
लौंडी एक बात कहे?"
13 उसने जवाब दिया, "कह" तब उस 'औरत ने कहा "कि तूने
ख़ुदा के लोगों के ख़िलाफ़ ऐसी तदबीर क्यों निकाली है? क्यूँकि
बादशाह इस बात के कहने से मुजरिम सा ठहरता है, इसलिए कि
बादशाह अपने जिला वतन को फिर घर लौटा कर नहीं आता।
14 क्यूँकि हम सबको मरना है, और हम ज़मीन पर गिरे हुए
पानी कि तरह हो जाते हैं जो फिर जमा' नहीं हो सकता, और
ख़ुदा किसी की जान नहीं लेता बल्कि ऐसे ज़रिए' निकालता है,
कि जिला वतन उसके यहाँ से निकाला हुआ न रहे।
15 और मैं जो अपने मालिक से यह बात कहने आई हूँ, तो

इसकी वजह यह है कि लोगों ने मुझे डरा दिया था, इसलिए तेरी
लौंडी ने कहा कि मैं ख़ुद बादशाह से दरख़्वास्त करूँगी, शायद
बादशाह अपनी लौंडी की गुज़ारिश पूरी करे।
16 क्यूँकि बादशाह सुनकर ज़रूर अपनी लौंडी को उस शख़्स के
हाथ से छुड़ाएगा, जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को ख़ुदा की मीरास
में से मिटा डालना चाहता है।'
17 इसलिए तेरी लौंडी ने कहा कि मेरे मालिक बादशाह की
बात तसल्ली बख़्श हो, क्यूँकि मेरा मालिक बादशाह नेकी और
गुनाह के फ़र्क करने में ख़ुदा के फ़रिश्ता की तरह है, इसलिए
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे साथ हो।"
18 तब बादशाह ने उस 'औरत से कहा, मैं तुझसे जो कुछ पूछूँ
तो उसको ज़रा भी मुझसे मत छिपाना। उस 'औरत ने कहा, "मेरा
मालिक बादशाह फ़रमाए।"
19 बादशाह ने कहा, "क्या इस सारे मु'आमले में योआब का
हाथ तेरे साथ है?" उस 'औरत ने जवाब दिया, तेरी जान की
क़सम "ऐ मेरे मालिक बादशाह कोई इन बातों से जो मेरे मालिक
बादशाह ने फ़रमाई हैं दहनी याँ बायीं तरफ़ नहीं मुड़ सकता
क्यूँकि तेरे ख़ादिम योआब ही ने मुझे हुक्म दिया और उसी ने
यह सब बातें तेरी लौंडी को सिखायीं।
20 और तेरे ख़ादिम योआब ने यह काम इसलिए किया ताकि
उस मज़मून के रंग ही को पलट दे और मेरा मालिक 'अक़्लमन्द
है, जिस तरह ख़ुदा के फ़रिश्ता में समझ होती है कि दुनिया की
सब बातों को जान ले।"
21 तब बादशाह ने योआब से कहा, "देख, मैंने यह बात मान
ली इसलिए तू जा और उस जवान अबीसलोम को फिर ले आ।"
22 तब यूआब ज़मीन पर औंधे होकर गिरा और सज्दा किया
और बादशाह को मुबारक बाद दी और योआब कहने लगा, "आज
तेरे बन्दा को यक़ीन हुआ ऐ मेरे मालिक बादशाह मुझ पर तेरे

करम की नज़र है इसलिए कि बादशाह ने अपने ख़ादिम की
गुज़ारिश पूरी की।"
23 फिर योआब उठा, और जसूर को गया और अबीसलोम को
येरूशलेम में ले आया।
24 तब बादशाह ने फ़रमाया, "वह अपने घर जाए और मेरा
मुँह न देखे।" तब अबीसलोम अपने घर गया और वह बादशाह
का मुँह देखने न पाया।
25 और सारे इस्राईल में कोई शख़्स अबीसलोम की तरह उसके
हुस्न की वजह से ता'रीफ़ के क़ाबिल न था क्यूँकि उसके पाँव के
तलवे से सर के चाँद तक उसमें कोई ऐब न था।
26 जब वह अपना सिर मुंडवाता था क्यूँकि हर साल के आख़िर
में वह उसे मुंडवाता था इसलिए कि उसके बाल घने थे, इसलिए
वह उनको मुंडवाता था तो अपने सिर के बाल वज़न में शाही तौल
बाट के मुताबिक़ *दो सौ मिस्क़ाल के बराबर पाता था।
27 और अबीसलोम से तीन बेटे पैदा हुए और एक बेटी जिसका
नाम तमर था वह बहुत ख़ूबसूरत 'औरत थी।
28 और अबीसलोम पूरे दो बरस येरूशलेम में रहा और बादशाह
का मुँह न देखा।
29 तब अबीसलोम ने योआब को बुलवाया ताकि उसे बादशाह
के पास भेजे, लेकिन उसने उसके पास आने से इन्कार किया, और
उसने दोबारह बुलवाया लेकिन वह न आया।
30 तब उसने अपने मुलाज़िमों से कहा, "देखो योआब का खेत
मेरे खेत से लगा है और उसमें जौ हैं इसलिए जाकर उसमें आग
लगा दो।" और अबीसलोम के मुलाज़िमों ने उस खेत में आग
लगा दी।
31 तब योआब उठा और अबीसलोम के पास उसके घर जाकर
उससे कहने लगा, "तेरे ख़ादिमों ने मेरे खेत में आग क्यों लगा
दी?"

* **14:26** लगभग 2:3 किलोग्राम चांदी

32 अबीसलोम ने योआब को जवाब दिया कि “देख मैंने तुझे
कहला भेजा कि यहाँ आ ताकि मैं तुझे बादशाह के पास यह कहने
को भेजूँ, कि मैं जसूर से यहाँ क्यों आया? मेरे लिए वहीं रहना
बेहतर होता, इसलिए बादशाह अब मुझे अपना दीदार दे और
अगर मुझमें कोई बुराई हो तो मुझे मार डाले।”
33 तब योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैग़ाम दिया
और जब उसने अबीसलोम को बुलवाया तब वह बादशाह के पास
आया और बादशाह के आगे ज़मीन पर सर झुका दिया, और
बादशाह ने अबीसलोम को बोसा दिया।

15

[illegible]

1 इसके बाद ऐसा हुआ कि अबीसलोम ने अपने लिए एक रथ
और घोड़े और पचास आदमी तैयार किए, जो उसके आगे आगे
दौड़ें।
2 और अबीसलोम सवेरे उठकर फाटक के रास्ता के बराबर
खड़ा हो जाता और जब कोई ऐसा आदमी आता जिसका मुक़द्दमा
फ़ैसला के लिए बादशाह के पास जाने को होता, तो अबीसलोम
उसे बुलाकर पूछता था कि “तू किस शहर का है?” और वह कहता
कि “तेरा ख़ादिम इस्राईल के फ़लाँ क़बीले का है?”
3 फिर अबीसलोम उससे कहता, “देख तेरी बातें तो ठीक और
सच्ची हैं लेकिन कोई बादशाह की तरफ़ से मुक़र्रर नहीं है जो तेरी
सुने।”
4 और अबीसलोम यह भी कहा करता था कि “काश मैं मुल्क
का क़ाज़ी बनाया गया होता तो हर शख़्स जिसका कोई मुक़द्दमा
या दा'वा होता मेरे पास आता और मैं उसका इन्साफ़ करता।”
5 और जब कोई अबीसलोम के नज़दीक आता था कि उसे सज्दा
करे तो वह हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेता और उसको बोसा देता
था।

6 और अबीसलोम सब इस्राईलियों से जो बादशाह के पास
फ़ैसला के लिए आते थे, इसी तरह पेश आता था। यूँ अबीसलोम
ने इस्राईल के दिल जीत लिए।
7 और चालीस बरस के बाद यूँ हुआ कि अबीसलोम ने बादशाह
से कहा, "मुझे ज़रा जाने दे कि मैं अपनी मिन्नत जो मैंने ख़ुदावन्द
के लिए मानी है हब्रून में पूरी करूँ।
8 क्यूँकि जब मैं अराम के जसूर में था तो तेरे ख़ादिम ने यह
मिन्नत मानी थी कि अगर ख़ुदावन्द मुझे फिर येरूशलेम में सच
मुच पहुँचा दे, तो मैं ख़ुदावन्द की इबादत करूँगा।"
9 बादशाह ने उससे कहा कि "सलामत जा।" इसलिए वह उठा
और हब्रून को गया।
10 और अबीसलोम ने बनी इस्राईल के सब क़बीलों में जासूस
भेजकर ऐलान करा दिया कि जैसे ही तुम नरसिंगे की आवाज़
सुनो तो बोल उठना कि "अबीसलोम हब्रून में बादशाह हो गया
है।"
11 और अबीसलोम के साथ येरूशलेम से दो सौ आदमी जिनको
दा'वत दी गई थी गये थे वह सादा दिली से गये थे और उनको
किसी बात की ख़बर नहीं थी।
12 और अबीसलोम ने कुर्बानियाँ अदा करते वक़्त जिलोनी
अख़ीतुफ़्फ़ल को जो दाऊद का सलाहकार था, उसके शहर जल्वा
से बुलवाया, यह बड़ी भारी साज़िश थी और अबीसलोम के पास
लोग बराबर बढ़ते ही जाते थे।
13 और एक क़ासिद ने आकर दाऊद को ख़बर दी कि "बनी
इस्राईल के दिल अबीसलोम की तरफ़ हैं।"
14 और दाऊद ने अपने सब मुलाज़िमों से जो येरूशलेम में
उसके साथ थे कहा, "उठो भाग चलें, नहीं तो हममें से एक भी
अबीसलोम से नहीं बचेगा, चलने की जल्दी करो ऐसा न हो कि
वह हम को झट आले और हम पर आफ़त लाये और शहर को

तहस नहस करे।"
15 बादशाह के ख़ादिमों ने बादशाह से कहा, "देख तेरे ख़ादिम
जो कुछ हमारा मालिक बादशाह चाहे उसे करने को तैयार हैं।"
16 तब बादशाह निकला और उसका सारा घराना उसके पीछे
चला और बादशाह ने दस 'औरतें जो बाँदी थीं घर की निगहबानी
के लिए पीछे छोड़ दीं।
17 और बादशाह निकला और सब लोग उसके पीछे चले और
वह बैत मिर्हाक़ में ठहर गये।
18 और उसके सब ख़ादिम उसके बराबर से होते हुए आगे गए
और सब करैती और सब फ़लैती और सब जाती या'नी वह छ:
सौ आदमी जो जात से उसके साथ आए थे बादशाह के सामने
आगे चले।
19 तब बादशाह ने जाती इती से कहा, "तू हमारे साथ क्यों
चलता है? तू लौट जा और बादशाह के साथ रह क्यूँकि तू परदेसी
और जिला वतन भी है, इसलिए अपनी जगह को लौट जा।
20 तू कल ही तो आया है, तो क्या आज मैं तुझे अपने साथ इधर
उधर फिराऊँ? जिस हाल कि मुझे जिधर जा सकता हूँ जाना है?
इसलिए तू लौट जा और अपने भाइयों को साथ लेता जा, रहमत
और सच्चाई तेरे साथ हों।"
21 तब इती ने बादशाह को जवाब दिया, "ख़ुदावन्द की हयात
की क़सम और मेरे मालिक बादशाह की जान की क़सम जहाँ कहीं
मेरा मालिक बादशाह चाहे मरते चाहे जीते होगा, वहीं ज़रूर तेरा
ख़ादिम भी होगा।"
22 तब दाऊद ने इती से कहा, "चल पार जा।" और जाती इती
और उसके सब लोग और सब नन्हे बच्चे जो उसके साथ थे पार
गये।
23 और सारा मुल्क ऊँची आवाज़ से रोया और सब लोग पार
हो गये, और बादशाह ख़ुद नहर क़िद्रोन के पार हुआ, और सब
लोगों ने पार हो कर जंगल की राह ली।

24 और सदूक़ भी और उसके साथ सब लावी ख़ुदा के 'अहद का
संदूक़ लिए हुए आए और उन्होंने ख़ुदा के संदूक़ को रख दिया,
और *अबीयातर ऊपर चढ़ गया और जब तक सब लोग शहर से
निकल न आए वहीं रहा।
25 तब बादशाह ने सदूक़ से कहा कि "ख़ुदा का संदूक़ शहर को
वापस ले जा, तब अगर ख़ुदावन्द के करम की नज़र मुझ पर होगी
तो वह मुझे फिर ले आएगा, और उसे और अपने घर को मुझे फिर
दिखाएगा।
26 लेकिन अगर वह यूँ फ़रमाए, कि मैं तुझसे ख़ुश नहीं, तो देख
मैं हाज़िर हूँ जो कुछ उसको अच्छा मा'लूम हो मेरे साथ करे।"
27 और बादशाह ने सदूक़ काहिन से यह भी कहा, "क्या तू
ग़ैब बीन नहीं? शहर को सलामत लौट जा और तुम्हारे साथ
तुम्हारे दोनों बेटे हों, अख़ीमा'ज़ जो तेरा बेटा है और यूनतन जो
अबीयातर का बेटा है।
28 और देख, मैं उस जंगल के घाटों के पास ठहरा रहूँगा जब
तक तुम्हारे पास से मुझे हक़ीक़त हाल की ख़बर न मिले।"
29 इसलिए सदूक़ और अबीयातर ख़ुदा का संदूक़ येरूशलेम
को वापस ले गये और वहीं रहे।
30 और दाऊद कोह — ए — ज़ैतून की चढ़ाई पर चढ़ने लगा
और रोता जा रहा था, उसका सिर ढका था और वह नंगे पाँव चल
रहा था, और वह सब लोग जो उसके साथ थे उनमें से हर एक
ने अपना सिर ढाँक रख्खा था, वह ऊपर चढ़ते जाते थे और रोते
जाते थे।
31 और किसी ने दाऊद को बताया कि "अख़ीतुफ़्फ़ल भी
फ़सादियों में शामिल और अबीसलोम के साथ है।" तब दाऊद ने
कहा, "ऐ ख़ुदावन्द! मैं तुझसे मिन्नत करता हूँ कि अख़ीतुफ़्फ़ल
की सलाह को बेवक़ूफ़ी से बदल दे।"

---

* **15:24** अबियातर ने कुर्बानियां चढ़ाई, अबियातर ऊपर चढ़ गया

32 जब दाऊद चोटी पर पहुँचा जहाँ ख़ुदा को सज्दा किया करते
थे, तो अरकी हूसी अपनी चोग़ा फाड़े और सिर पर ख़ाक डाले
उसके इस्तक़बाल को आया।
33 और दाऊद ने उससे कहा, "अगर तू मेरे साथ जाए तो मुझ
पर बोझ होगा।
34 लेकिन अगर तू शहर को लौट जाए और अबीसलोम से कहे
कि, ऐ बादशाह मैं तेरा ख़ादिम हूँगा जैसे गुज़रे ज़माना में तेरे
बाप का ख़ादिम रहा वैसे ही अब तेरा ख़ादिम हूँ तो तू मेरी ख़ातिर
अख़ीतुफ़्फ़ल की सलाह को रद कर देगा
35 और क्या वहाँ तेरे साथ सदूक़ और अबीयातर काहिन न
होंगे? इसलिए जो कुछ तू बादशाह के घर से सुने उसे सदूक़ और
अबियातर काहिनों को बता देना।
36 देख वहाँ उनके साथ उनके दोनों बेटे हैं या'नी सदूक़ का बेटा
अख़ीमा'ज़ और अबीयातर का बेटा यूनतन इसलिए जो कुछ तुम
सुनो, उसे उनके ज़रिए' मुझे कहला भेजना।"
37 इसलिए दाऊद का दोस्त हूसी †शहर में आया और
अबीसलोम भी ‡येरूशलेम में पहुँच गया।

16

?????? ?? ??????

1 और जब दाऊद चोटी से आगे बढ़ा तो मिफ़ीबोसत का
ख़ादिम ज़ीबा दो गधे लिए हुए उसे मिला, जिन पर जीन कसे
थे और उनके ऊपर दो सौ रोटियाँ और किशमिश के सौ गुच्छे
और ताबिस्तानी मेवों के सौ दाने और मय का एक मश्कीज़ा था।
2 और बादशाह ने ज़ीबा से कहा, "इन से तेरा क्या मतलब है?"
ज़ीबा ने कहा, "यह गधे बादशाह के घराने की सवारी के लिए

† **15:37** यरूशलेम ‡ **15:37** वहां

और रोटियाँ और गर्मी के फल जवानों के खाने के लिए हैं और
यह शराब इसलिए है कि जो बयाबान में थक जायें उसे पियें।"
3 और बादशाह ने पूछा, "तेरे आक़ा का बेटा कहाँ है?" ज़ीबा ने
बादशाह से कहा, "देख वह येरूशलेम में रह गया है क्यूँकि उसने
कहा आज इस्राईल का घराना मेरे बाप की बादशाहत मुझे लौटा
देगा।"
4 तब बादशाह ने ज़ीबा से कहा, "देख! जो कुछ मिफ़ीबोसत
का है वह सब तेरा हो गया।" तब ज़ीबा ने कहा, "मैं सिज्दा करता
हूँ ऐ मेरे मालिक बादशाह तेरे करम की नज़र मुझ पर रहे!"
5 जब दाऊद बादशाह बहूरेम पहुँचा तो वहाँ से साऊल के
घर के लोगों में से एक शख़्स जिसका नाम सिम'ई बिन जीरा था
निकला और ला'नत करता हुआ आया।
6 और उसने दाऊद पर और दाऊद बादशाह के सब ख़ादिमों
पर पत्थर फेंके और सब लोग और सब सूरमा उसके दहने और
बायें हाथ थे।
7 और सिम'ई ला'नत करते वक़्त यूँ कहता था, "दूर हो! दूर
हो! ऐ ख़ूनी आदमी ऐ ख़बीस!
8 ख़ुदावन्द ने साऊल के घराने के सब ख़ून को जिसके बदले
तू बादशाह हुआ तेरे ही ऊपर लौटाया, और ख़ुदावन्द बादशाहत
तेरे बेटे अबीसलोम के हाथ में दे दी, है और देख तू अपनी ही
बुराई में ख़ुद आप फंस गया है इसलिए कि तू ख़ूनी आदमी है।"
9 तब ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने बादशाह से कहा, "यह मरा
हुआ कुत्ता मेरे मालिक बादशाह पर क्यूँ ला'नत करे? मुझको
ज़रा उधर जाने दे कि उसका सिर उड़ा दूँ।"
10 बादशाह ने कहा, "ऐ ज़रोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या
काम? वह जो ला'नत कर रहा है, और ख़ुदावन्द ने उससे कहा
है कि दाऊद पर ला'नत कर इसलिए कौन कह सकता है कि तूने
क्यों ऐसा किया?"

11 और दाऊद ने अबीशै से और अपने सब ख़ादिमों से कहा,
“देखो मेरा बेटा ही जो मेरे सुल्ब से पैदा हुआ मेरी जान का
तालिब है तब अब यह बिनयमीनी कितना ज़्यादा ऐसा न करे?
उसे छोड़ दो और ला'नत करने दो क्यूँकि ख़ुदावन्द ने उसे हुक्म
दिया है
12 शायद ख़ुदावन्द उस ज़ुल्म पर जो मेरे ऊपर हुआ है, नज़र
करे और ख़ुदावन्द आज के दिन उसकी ला'नत के बदले मुझे नेक
बदला दे।”
13 तब दाऊद और उसके लोग रास्ता चलते रहे और सिम'ई
उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर चलता रहा और चलते चलते
ला'नत करता और उसकी तरफ़ पत्थर फेंकता और ख़ाक डालता
रहा।
14 और बादशाह और उसके सब साथी थके हुए आए और वहाँ
उसने आराम किया।
15 और अबीसलोम और सब इस्राईली मर्द येरूशलेम में आए
और अख़ीतुफ़्फ़ल उसके साथ था।
16 और ऐसा हुआ कि जब दाऊद का दोस्त अरकी हूसी
अबीसलोम के पास आया तो हूसी ने अबीसलोम से कहा,
“बादशाह जीता रहे! बादशाह जीता रहे!”
17 और अबीसलोम ने हूसी से कहा, “क्या तूने अपने दोस्त पर
यही महेरबानी की? तू अपने दोस्त के साथ क्यों न गया?”
18 हूसी ने अबीसलोम से कहा, “नहीं बल्कि जिसको ख़ुदावन्द
ने और इस क़ौम ने और इस्राईल के सब आदमियों ने चुन लिया
है मैं उसी का हूँगा और उसी के साथ रहूँगा।
19 और फिर मैं किसकी ख़िदमत करूँ? क्या मैं उसके बेटे के
सामने रह कर ख़िदमत न करूँ? जैसे मैंने तेरे बाप के सामने रहकर
की वैसे ही तेरे सामने रहूँगा।”
20 तब अबीसलोम ने अख़ीतुफ़्फ़ल से कहा, “तुम सलाह दो कि

हम क्या करें।”

21 तब अख़ीतुफ्फ़ल ने अबीसलोम से कहा कि “अपने बाप की बाँदियों के पास जा जिनको वह घर की निगह बानी को छोड़ गया है, इसलिए कि जब इस्राईली सुनेंगे कि तेरे बाप को तुझ से नफ़रत है, तो उन सबके हाथ जो तेरे साथ हैं ताक़तवर हो जायेंगे।”

22 फिर उन्होंने महल की छत पर अबीसलोम के लिए एक तम्बू खड़ा कर दिया और अबीसलोम सब इस्राईल के सामने अपने बाप की बाँदियों के पास गया।

23 और अख़ीतुफ्फ़ल की सलाह जो इन दिनों होती वह ऐसी समझी जाती थी, कि गोया ख़ुदा के कलाम से आदमी ने बात पूछ ली, यूँ अख़ीतुफ़्फ़ल की सलाह दाऊद और अबीसलोम की ख़िदमत में ऐसी ही होती थी।

17

1 और अख़ीतुफ्फ़ल ने अबीसलोम से यह भी कहा कि “मुझे अभी बारह हज़ार जवान चुन लेने दे और मैं उठकर आज ही रात को दाऊद का पीछा करूँगा।

2 और ऐसे हाल में कि वह थका माँदा हो और उसके हाथ ढीले हों, मैं उस पर जा पड़ूँगा और उसे डराऊँगा, और सब लोग जो उसके साथ हैं भाग जायेंगे, और मैं सिर्फ़ बादशाह को मारूँगा।

3 और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लाऊँगा, जिस आदमी का तू तालिब है वह ऐसा है कि जैसे सब लौट आए, यूँ सब लोग सलामत रहेंगे।

4 यह बात अबीसलोम को और इस्राईल के सब बुज़ुर्गों को बहुत अच्छी लगी।”

[illegible]

5 और अबीसलोम ने कहा, अब अरकी हूसी को भी बुलाओ और जो वह कहे हम उसे भी सुनें।

6 जब हूसी अबीसलोम के पास आया तो अबीसलोम ने उससे
कहा कि, “अख़ीतुफ़्फ़ल ने तो यह कहा है, क्या हम उसके कहने
के मुताबिक़ 'अमल करें? अगर नहीं तो तू बता।”
7 हूसी ने अबीसलोम से कहा कि, “वह सलाह जो अख़ीतुफ़्फ़ल
ने इस बार दी है अच्छी नहीं।”
8 इसके 'अलावा हूसी ने यह भी कहा कि, “तू अपने बाप को
और उसके आदमियों को जानता है कि वह बहादुर लोग हैं, और
वह अपने दिल ही दिल में उस रीछनी की तरह, जिसके बच्चे
जंगल में छिन गये हों झल्ला रहे होंगे और तेरा बाप जंगी मर्द
है, और वह लोगों के साथ नहीं ठहरेगा
9 और देख अब तो वह किसी ग़ार में या किसी दूसरी जगह
छिपा हुआ होगा। और जब शुरू' ही में थोड़े से क़त्ल हों जायेंगे,
तो जो कोई सुनेगा यही कहेगा, कि अबीसलोम के पैरोकार के
बीच तो ख़ूँरेज़ी शुरू' है।
10 तब वह भी जो बहादुर है और जिसका दिल शेर के दिल की
तरह है बिल्कुल पिघल जाएगा क्यूँकि सारा इस्राईल जानता है
कि तेरा बाप बहादुर आदमी है और उसके साथ के लोग सूरमा हैं।
11 तो मैं यह सलाह देता हूँ कि दान से बेर सबा' तक के सब
इस्राईली समुन्दर के किनारे की रेत की तरह तेरे पास कसरत से
इकट्ठे किए जायें और तू आप ही लड़ाई पर जा।
12 यूँ हम किसी न किसी जगह जहाँ वह मिले उस पर जा ही
पड़ेंगे और हम उस पर ऐसे गिरेंगे जैसे शबनम ज़मीन पर गिरती
है, फिर न तो हम उसे और न उसके साथ के सब आदमियों में से
किसी को जीता छोड़ेंगे।
13 इसके 'अलावा अगर वह किसी शहर में घुसा हुआ होगा
तो सब इस्राईली उस शहर के पास रस्सियाँ ले आयेंगे और हम
उसको खींचकर दरया में कर देंगे यहाँ तक कि उसका एक छोटा
सा पत्थर भी वहाँ नहीं मिलेगा।”

14 तब अबीसलोम और सब इस्राईली कहने लगे कि "यह
सलाह जो अरकी हूसी ने दी है अख़ीतुफ़्फ़ल की सलाह से अच्छी
है।" क्यूँकि यह तो ख़ुदावन्द ही ने ठहरा दिया था कि अख़ीतुफ़्फ़ल
की अच्छी सलाह बातिल हो जाए ताकि ख़ुदावन्द अबीसलोम
पर बला नाज़िल करे।
15 तब हूसी ने सदूक़ और अबीयातर काहिनों से कहा कि
"अख़ीतुफ़्फ़ल ने अबीसलोम को और बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों को
ऐसी ऐसी सलाह दी और मैंने यह सलाह दी।
16 इसलिए अब जल्द दाऊद के पास कहला भेजो कि आज
रात को जंगल के घाटों पर न ठहर बल्कि जिस तरह हो सके पार
उतर जा ताकि ऐसा न हो कि बादशाह और सब लोग जो उसके
साथ हैं निगल लिए जायें।"
17 और यूनतन और अख़ीमा'ज़ 'ऐन राजिल के पास ठहरे थे
और एक लौंडी जाती और उनको ख़बर दे आती थी और वह जाकर
दाऊद को बता देते थे क्यूँकि मुनासिब न था कि वह शहर में आते
दिखाई देते।
18 लेकिन एक लड़के ने उनको देख लिया और अबीसलोम को
ख़बर दी लेकिन वह दोनों जल्दी करके निकल गये और बहूरीम में
एक शख़्स के घर गये जिसके सहन में एक कुआँ था इसलिए वह
उसमें उतर गये।
19 और उस 'औरत ने पर्दा ले कर कुवें के मुहँ पर बिछाया और
उस पर दला हुआ अनाज फैला दिया और कुछ मा'लूम नहीं होता
था।
20 और अबीसलोम के ख़ादिम उस घर पर उस 'औरत के पास
आए और पूछा कि "अख़ीमा'ज़ और यूनतन कहाँ हैं?" उस 'औरत
ने उनसे कहा, "वह नाले के पार गये।" और जब उन्होंने उनको
ढूंडा और न पाया तो येरूशलेम को लौट गये।
21 और ऐसा हुआ कि जब यह चले गये तो वह कुवें से निकले
और जाकर दाऊद बादशाह को ख़बर दी और वह दाऊद से कहने

लगे, कि “उठो और दरया पार हो जाओ क्यूँकि अख़ीतुफ़्फ़ल ने
तुम्हारे ख़िलाफ़ ऐसी ऐसी सलाह दी है।”
22 तब दाऊद और सब लोग जो उसके साथ थे उठे और यरदन
के पार गये, और सुबह की रोशनी तक उनमें से एक भी ऐसा न
था जो यरदन के पार न हो गया हो।
23 जब अख़ीतुफ़्फ़ल ने देखा कि उसकी सलाह पर 'अमल नहीं
किया गया तो उसने अपने गधे पर ज़ीन कसा और उठ कर अपने
शहर को अपने घर गया और अपने घराने का बन्दोबस्त करके
अपने को फाँसी दी और मर गया और अपने बाप की क़ब्र में दफ़न
हुआ।
24 तब दाऊद महनायम में आया और अबीसलोम और सब
इस्राईली जवान जो उसके साथ थे यरदन के पार हुए।
25 और अबीसलोम ने योआब के बदले 'अमासा को लश्कर
का सरदार किया, यह 'अमासा एक *इस्राईली आदमी का बेटा
था जिसका नाम इतरा था उसने नाहस की बेटी अबीजेल से जो
योआब की माँ ज़रोयाह की बहन थी सोहबत की थी।
26 और इस्राईली और अबीसलोम जिल'आद के मुल्क में ख़ेमा
ज़न हुए।
27 और जब दाऊद महनायम में पहुँचा तो ऐसा हुआ कि नाहस
का बेटा सोबी, बनी अम्मोन के रब्बा से और अम्मी ऐल का बेटा
मकीर लूदबार से और बरज़िल्ली जिल'आदी राजिलीम से।
28 पलंग और चार पाइयाँ और बासन और मिट्टी के बर्तन और
गेहूँ और जौ और आटा और भुना हुआ अनाज और लोबिये की
फलियाँ और मसूर और भुना हुआ चबेना।
29 और शहद और मख्खन और भेड़ और गाय के दूध का पनीर
दाऊद के और उसके साथ के लोगों के खाने के लिए लाये क्यूँकि
उन्होंने कहा कि “लोग बयाबान में भूके और थके और प्यासे हैं।”

---

* **17:25** इश्माईलियों

18

[illegible]

1 और दाऊद ने उन लोगों को जो उसके साथ थे गिना और
हज़ारों के और सैकड़ों के सरदार मुक़र्रर किए।
2 और दाऊद ने लोगों की एक तिहाई योआब के मातहत और
एक तिहाई योआब के भाई अबीशै बिन ज़रोयाह के मातहत और
तिहाई जाती इत्ती के मातहत करके उनको रवाना किया और
बादशाह ने लोगों से कहा कि "मैं ख़ुद भी ज़रूर तुम्हारे साथ
चलूँगा।"
3 लेकिन लोगों ने कहा कि "तू नहीं जाने पायेगा क्यूँकि हम
अगर भागें तो उनको कुछ हमारी परवा न होगी और अगर हम
में से आधे मारे जायें तो भी उनको कुछ परवा न होगी लेकिन तू
हम जैसे दस हज़ार के बराबर है इसलिए बेहतर यह है कि तू शहर
में से हमारी मदद करने को तैयार रहे।"
4 बादशाह ने उनसे कहा, "जो तुमको बेहतर मा'लूम होता है
मैं वही करूँगा।" इसलिए बादशाह शहर के फाटक की एक तरफ़
खड़ा रहा और सब लोग सौ सौ और हज़ार हज़ार करके निकलने
लगे।
5 और बादशाह ने योआब और अबीशै और इती को फ़रमाया
कि "मेरी ख़ातिर उस जवान अबीसलोम के साथ नरमी से पेश
आना।" जब बादशाह ने सब सरदारों को अबीसलोम के हक़ में
नसीहत की तो सब लोगों ने सुना।
6 इसलिए वह लोग निकल कर मैदान में इस्राईल के मुक़ाबिले
को गये और इफ़्राईम के जंगल में हुई।
7 और वहाँ इस्राईल के लोगों ने दाऊद के ख़ादिमों से शिकस्त
खाई और उस दिन ऐसी बड़ी ख़ूँरेज़ी हुई कि बीस हज़ार आदमी
मारे गए।
8 इसलिए कि उस दिन सारी बादशाहत में जंग थी और लोग
इतने तलवार का लुक़्मा नहीं बने जितने बन का शिकार हुए।

9 और अचानक अबीसलोम दौड़ के दाऊद के ख़ादिमों के सामने
आ गया और अबीसलोम अपने खच्चर पर सवार था और वह
खच्चर एक बड़े बलूत के दरख़्त की घनी डालियों के नीचे से गया,
इसलिए उसका सिर बलूत में अटक गया और वह आसमान और
ज़मीन के बीच में लटका रह गया और वह खच्चर जो उसके रान
तले था निकल गया।
10 किसी शख़्स ने यह देखा और योआब को ख़बर दी कि "मैंने
अबीसलोम को बलूत के दरख़्त में लटका हुआ देखा।"
11 और योआब ने उस शख़्स से जिसने उसे ख़बर दी थी कहा,
"तूने यह देखा फिर क्यों नहीं तूने उसे मार कर वहीं ज़मीन पर
गिरा दिया? क्यूँकि मैं तुझे चाँदी के दस टुकड़े और कमर बंद
देता।"
12 उस शख़्स ने योआब से कहा कि "अगर मुझे चाँदी के हज़ार
टुकड़े भी मेरे हाथ में मिलते तो भी मैं बादशाह के बेटे पर हाथ न
उठाता क्यूँकि बादशाह ने हमारे सुनते तुझे और अबीशै और इती
को नसीहत की थी कि ख़बरदार कोई उस जवान अबीसलोम को
न छुए।
13 वरना अगर मैं उसकी जान के साथ दग़ा खेलता और
बादशाह से तो कोई बात छुपी भी नहीं तो तू ख़ुद भी किनारा
कर लेता।"
14 तब योआब ने कहा, "मैं तेरे साथ यूँ ही ठहरा नहीं रह
सकता।" फिर उसने तीन तीर हाथ में लिए और उनसे अबीसलोम
के दिल को जो अभी बलूत के दरख़्त के बीच ज़िन्दा ही था छेद
डाला।
15 और दस जवानों ने जो योआब के सलह बरदार थे
अबीसलोम को घेर कर उसे मारा और क़त्ल कर दिया।
16 तब योआब ने नरसिंगा फूँका और लोग इस्राईलियों का
पीछा करने से लौटे क्यूँकि योआब ने लोगों को रोक लिया।
17 और उन्होंने अबीसलोम को लेकर बन के उस बड़े गढ़े में
डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया

और सब इस्राईली अपने अपने डेरे को भाग गये।

18 और अबीसलोम ने अपने जीते जी एक लाट लेकर खड़ी
कराई थी जो शाही वादी में है क्यूँकि उसने कहा, मेरे कोई बेटा
नहीं जिससे मेरे नाम की यादगार रहे इसलिए उसने उस लाट को
अपना नाम दिया। और वह आज तक अबीसलोम की यादगार
कहलाती है।

19 तब सदूक़ के बेटे अख़ीमा'ज़ ने कहा कि "मुझे दौड़ कर
बादशाह को ख़बर पहुँचाने दे कि ख़ुदावन्द ने उसके दुश्मनों से
उसका बदला ले लिया।"

20 लेकिन योआब ने उससे कहा कि आज के दिन तू कोई ख़बर
न पहुँचा बल्कि दूसरे दिन ख़बर पहुँचा देना लेकिन आज तुझे कोई
ख़बर नहीं ले जाना होगा इसलिए बादशाह का बेटा मर गया है।

21 तब योआब ने कूशी से कहा कि जा कर जो कुछ तूने देखा
है इसलिए बादशाह को जाकर बता दे। तब वह कूशी योआब को
सज्दा करके दौड़ गया।

22 तब सदूक़ के बेटे अख़ीमा'ज़ ने फिर योआब से कहा, "चाहे
कुछ ही हो तू मुझे भी उस कूशी के पीछे दौड़ जाने दे।" योआब ने
कहा, "ऐ मेरे बेटे तू क्यूँ दौड़ जाना चाहता है जिस हाल कि इस
ख़बर के बदले तुझे कोई इन'आम नहीं मिलेगा?"

23 उसने कहा, चाहे कुछ ही हो मैं तो जाऊँगा "उसने कहा,
दौड़ जा।" तब अख़ीमा'ज़ मैदान से होकर दौड़ गया और कूशी से
आगे बढ़ गया।

24 और दाऊद दोनों फाटकों के दरमियान बैठा था और पहरे
वाला फाटक की छत से होकर दीवार पर गया और क्या देखता
है कि एक शख़्स अकेला दौड़ा आता है।

25 उस पहरे वाले ने पुकार कर बादशाह को ख़बर दी, बादशाह
ने फ़रमाया, "अगर वह अकेला है तो मुँह ज़बानी ख़बर लाता
होगा।" और वह तेज़ आया और नज़दीक पहुँचा।

26 और पहरे वाले ने एक और आदमी को देखा कि दौड़ा आता
है, तब उस पहरे वाले ने दरबान को पुकार कर कहा कि "देख एक
शख़्स और अकेला दौड़ा आता है।" बादशाह ने कहा, "वह भी
ख़बर लाता होगा।"
27 और पहरे वाले ने कहा, "मुझे अगले का दौड़ना सदूक़ के
बेटे अख़ीमा'ज़ के दौड़ने की तरह मा'लूम देता है।" तब बादशाह
ने कहा, "वह भला आदमी है और अच्छी ख़बर लाता होगा।"
28 और अख़ीमा'ज़ ने पुकार कर बादशाह से कहा, "ख़ैर है!"
और बादशाह के आगे ज़मीन पर झुक कर सिज्दा किया और
कहा कि "ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा मुबारक हो जिसने उन आदमियों
को जिन्होंने मेरे मालिक बादशाह के ख़िलाफ़ हाथ उठाये थे क़ाबू
में कर दिया है।"
29 बादशाह ने पूछा क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है?
अख़ीमा'ज़ ने कहा कि "जब योआब ने बादशाह के ख़ादिम को
या'नी मुझको जो तेरा ख़ादिम हूँ रवाना किया तो मैंने एक बड़ी
हलचल तो देखी लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या थी।"
30 तब बादशाह ने कहा, "एक तरफ़ हो जा और यहीं खड़ा रह।"
इसलिए वह एक तरफ़ होकर चुप चाप खड़ा हो गया।
31 फिर वह कूशी आया और कूशी ने कहा, "मेरे मालिक
बादशाह के लिए ख़बर है क्यूँकि ख़ुदावन्द ने आज के दिन उन
सबसे जो तेरे ख़िलाफ़ उठे थे तेरा बदला लिया।"
32 तब बादशाह ने कूशी से पूछा, "क्या वह जवान अबीसलोम
सलामत है?" कूशी ने जवाब दिया कि "मेरे मालिक बादशाह के
दुश्मन और जितने तुझे तकलीफ़ पहुँचाने को तेरे ख़िलाफ़ उठें वह
उसी जवान की तरह हो जायें।"
33 तब बादशाह बहुत बेचैन हो गया और उस कोठरी की तरफ़
जो फाटक के ऊपर थी रोता हुआ चला और चलते चलते यूँ
कहता जाता था, "हाय मेरे बेटे अबीसलोम! मेरे बेटे! मेरे बेटे

अबीसलोम! काश मैं तेरे बदले मर जाता! ऐ अबीसलोम! मेरे
बेटे! मेरे बेटे।"

19

[illegible]

1 और योआब को बताया गया कि "देख बादशाह अबीसलोम
के लिए नौहा और मातम कर रहा है।"
2 इसलिए तमाम लोगों के लिए उस दिन की फ़तह मातम से
बदल गई क्यूँकि लोगों ने उस दिन यह कहते सुना कि "बादशाह
अपने बेटे के लिए दुखी है।"
3 इसलिए वह लोग उस दिन चोरी से शहर में घुसे जैसे वह
लोग जो लड़ाई से भागते हैं शर्म के मारे चोरी चोरी चलते हैं।
4 और बादशाह ने अपना मुँह ढाँक लिया और बादशाह ऊँची
आवाज़ से चिल्लाने लगा कि "हाय मेरे बेटे अबीसलोम! हाय
अबीसलोम मेरे बेटे! मेरे बेटे।"
5 तब योआब घर में बादशाह के पास जाकर कहने लगा कि
"तूने आज अपने सब ख़ादिमों को शर्मिन्दा किया, जिन्होंने आज
के दिन तेरी जान और तेरे बेटों और तेरी बेटियों की जानें और
तेरी बीवियों की जानें और तेरी बाँदियों की जानें बचायीं।
6 क्यूँकि तू अपने 'अदावत रखने वालों को प्यार करता है, और
अपने दोस्तों से 'अदावत रखता है, इसलिए कि तूने आज के दिन
ज़ाहिर कर दिया कि सरदार और ख़ादिम तेरे नज़दीक बेक़द्र हैं,
क्यूँकि आज के दिन मैं देखता हूँ कि अगर अबीसलोम जीता रहता
और हम सब मर जाते, तो तू बहुत ख़ुश होता।
7 इसलिए उठ बाहर निकल और अपने ख़ादिमों से तसल्ली
बख़्श बातें कर क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द की क़सम खाता हूँ कि अगर
तू बाहर न जाए तो आज रात को एक आदमी भी तेरे साथ न
रहेगा और यह तेरे लिए उन सब आफ़तों से बदतर होगा जो तेरी
नौजवानी से लेकर अब तक तुझ पर आई है।"

8 तब बादशाह उठकर फाटक में जा बैठा और सब लोगों को
बताया गया कि देखो बादशाह फाटक में बैठा है, तब सब लोग
बादशाह के सामने आए और इस्राईली अपने अपने डेरे को भाग
गये थे।
9 और इस्राईल के क़बीलों के सब लोगों में झगड़ा था और
वह कहते थे कि "बादशाह ने हमारे दुश्मनों के हाथ से और
फ़िलिस्तियों के हाथ से बचाया और अब वह अबीसलोम के
सामने से मुल्क छोड़ कर भाग गया।
10 और अबीसलोम जिसे हमने मसह करके अपना हाकिम
बनाया था, लड़ाई में मर गया है इसलिए तुम अब बादशाह को
वापस लाने की बात क्यों नहीं करते?"
11 तब दाऊद बादशाह ने सदूक़ और अबीयातर काहिनों को
कहला भेजा कि "यहूदाह के बुज़ुर्गों से कहो कि तुम बादशाह को
उसके महल में पहुँचाने के लिए सबसे पीछे क्यों होते हो जिस
हाल कि सारे इस्राईल की बात उसे उसके महल में पहुँचाने के बारे
में बादशाह तक पहुँची है।
12 तुम तो मेरे भाई और मेरी हड्डी हो फिर तुम बादशाह को
वापस ले जाने के लिए सबसे पीछे क्यों हो?
13 और 'अमासा से कहना क्या तू मेरी हड्डी और गोश्त नहीं?
इसलिए अगर तू योआब की जगह मेरे सामने हमेशा के लिए
लश्कर का सरदार न हो तो ख़ुदा मुझसे ऐसा ही बल्कि इससे भी
ज़्यादा करे।"
14 और उसने सब बनी यहूदाह का दिल एक आदमी के दिल की
तरह माएल कर लिया चुनाँचे उन्होंने बादशाह को पैग़ाम भेजा
कि "तू अपने सब ख़ादिमों को साथ लेकर लौट आ।"
15 इसलिए बादशाह लौट कर यरदन पर आया और सब बनी
यहूदाह ज़िल्जाल को गये कि बादशाह का इस्तक़बाल करें और
उसे यरदन के पार ले आयें।

16 और जीरा के बेटे बिनयमीनी सिम'ई ने जो बहूरीम का
था जल्दी की और बनी यहूदाह के साथ दाऊद बादशाह के
इस्तक़बाल को आया।
17 और उसके साथ एक हज़ार बिनयमीनी जवान थे और
साऊल के घराने का ख़ादिम ज़ीबा अपने पन्दरह बेटों और बीस
नौकरों समेत आया और बादशाह के सामने यरदन के पार उतरे।
18 और एक कश्ती पार गई कि बादशाह के घराने को ले आये
और जो काम उसे मुनासिब मा'लूम हो उसे करे और ज़ीरा का बेटा
सिम'ई बादशाह के सामने जैसे ही वह यरदन पार हुआ औंधा हो
कर गिरा।
19 और बादशाह से कहने लगा कि मेरा मालिक मेरी तरफ़
गुनाह मंसूब न करे और जिस दिन मेरा मालिक बादशाह
येरूशलेम से निकला उस दिन जो कुछ तेरे ख़ादिम ने बद
मिज़ाजी से किया उसे ऐसा याद न रख कि बादशाह उसको अपने
दिल में रख्खे।
20 क्यूँकि तेरा बन्दा यह जानता है कि "मैंने गुनाह किया है
और देख आज के दिन मैं ही यूसुफ़ के घराने में से पहले आया हूँ
कि अपने मालिक बादशाह का इस्तक़बाल करूँ।
21 और ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने जवाब, दिया क्या सिम'ई इस
वजह से मारा न जाए कि उसने ख़ुदावन्द के ममसूह पर ला'नत
की?"
22 दाऊद ने कहा, "ऐ ज़रोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या काम
कि तुम आज के दिन मेरे मुखालिफ़ हुए हो? क्या इस्राईल में से
कोई आदमी आज के दिन क़त्ल किया जाए? क्या मैं यह नहीं
जानता कि मैं आज के दिन इस्राईल का बादशाह हूँ?"
23 और बादशाह ने सिम'ई से कहा, तू मारा नहीं जाएगा "और
बादशाह ने उससे क़सम खाई।
24 फिर साऊल का बेटा मिफ़ीबोसत बादशाह के इस्तक़बाल

को आया, उसने बादशाह के चले जाने के दिन से लेकर उसे
सलामत घर आजाने के दिन तक न तो अपने पाँव पर पट्टियाँ
बाँधी और न अपनी दाढ़ी कतरवाई और न अपने कपड़े धुलवाए
थे।
25 और ऐसा हुआ कि जब वह येरूशलेम में बादशाह से मिलने
आया तो बादशाह ने उससे कहा, ऐ मिफ़ीबोसत तू मेरे साथ क्यों
नहीं गया था?"
26 उसने जवाब दिया, ऐ मेरे मालिक बादशाह मेरे नौकर ने
मुझसे दग़ा की क्यूँकि तेरे ख़ादिम ने कहा था कि मैं अपने लिए
गधे पर जीन कसूँगा ताकि मैं सवार हो कर बादशाह के साथ जाऊँ
इसलिए कि तेरा ख़ादिम लंगड़ा है।
27 तब उसने मेरे मालिक बादशाह के सामने तेरे ख़ादिम पर
इल्ज़ाम लगाया, लेकिन मेरा मालिक बादशाह तू ख़ुदावन्द के
फ़रिश्ता की तरह है, इसलिए जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम हो
वह कर।
28 क्यूँकि मेरे बाप का सारा घराना, मेरे मालिक बादशाह के
आगे मुर्दों के तरह था तो भी तूने अपने ख़ादिम को उन लोगों के
बीच बिठाया जो तेरे दस्तरख़्वान पर खाते थे तब क्या अब भी
मेरा कोई हक़ है कि मैं बादशाह के आगे फिर फ़रयाद करूँ?
29 बादशाह ने उनसे कहा, "तू अपनी बातें क्यों बयान करता
जाता है? मैं कहता हूँ कि तू और ज़ीबा दोनों उस ज़मीन को आपस
में बाँट लो।"
30 और मिफ़ीबोसत ने बादशाह से कहा, "वही सब ले ले
इसलिए कि मेरा मालिक बादशाह अपने घर में फिर सलामत
आ गया है।"
31 और बरज़िल्ली जिल'आदी रजिलीम से आया और बादशाह
के साथ यरदन पार गया ताकि उसे यरदन के पार पहुँचाये।
32 और यह बरज़िल्ली बहुत ही उम्र दराज़ आदमी या'नी अस्सी
बरस का था, उसने बादशाह को जब तक वह मेहनायम में रहा

ख़ुराक पहुँचाई थी इसलिए कि वह बहुत बड़ा आदमी था।
33 तब बादशाह ने बरज़िल्ली से कहा कि "तू मेरे साथ चल और
मैं येरूशलेम में अपने साथ तेरी परवरिश करूँगा।"
34 और बरज़िल्ली ने बादशाह को जवाब दिया कि "मेरी ज़िन्दगी
के दिन ही कितने हैं जो मैं बादशाह के साथ येरूशलेम को जाऊँ?
35 आज मैं अस्सी बरस का हूँ, क्या मैं भले और बुरे में फ़र्क कर
सकता हूँ? क्या तेरा बन्दा जो कुछ खाता पीता है उसका मज़ा
जान सकता है? क्या मैं गाने वालों और गाने वालियों की फिर
आवाज़ सुन सकता हूँ? तब तेरा बन्दा अपने बादशाह पर क्यों
बोझ हो?
36 तेरा बन्दा सिर्फ़ यरदन के पार तक बादशाह के साथ जाना
चाहता है, इसलिए बादशाह मुझे ऐसा बड़ा बदला क्यूँ दे?
37 अपने बन्दा को लौट जाने दे ताकि मैं अपने शहर में अपने
बाप और माँ की क़ब्र के पास मरूँ लेकिन देख तेरा बन्दा किम्हाम
हाज़िर है, वह मेरे मालिक बादशाह के साथ पार जाए और जो
कुछ तुझे अच्छा मा'लूम दे उससे कर।"
38 तब बादशाह ने कहा, "किम्हाम मेरे साथ पार चलेगा और
जो कुछ तुझे अच्छा मा'लूम हो वही मैं उसके साथ करूँगा और
जो कुछ तू चाहेगा मैं तेरे लिए वही करूँगा।"
39 और सब लोग यरदन के पार हो गये और बादशाह भी पार
हुआ, फिर बादशाह ने बरज़िल्ली को चूमा और उसे दुआ दी और
वह अपनी जगह को लौट गया।
40 तब बादशाह जिलजाल को रवाना हुआ और किम्हाम उसके
साथ चला और यहूदाह के सब लोग और इस्राईल के लोगों में से
भी आधे बादशाह को पार लाये।
41 तब इस्राईल के सब लोग बादशाह के पास आकर उससे
कहने लगे कि "हमारे भाई बनी यहूदाह तुझे क्यूँ चोरी से ले आए
और बादशाह को और उसके घराने को और दाऊद के साथ जितने

थे उनको यरदन के पार से लाये?”
42 तब सब बनी यहूदाह ने बनी इस्राईल को जवाब दिया,
“इसलिए कि बादशाह का हमारे साथ नज़दीक का रिश्ता है, तब
तुम इस बात की वजह से नाराज़ क्यों हुए? क्या हमने बादशाह
के दाम का कुछ खा लिया है या उसने हमको कुछ इन'आम दिया
है?”
43 फिर बनी इस्राईल ने बनी यहूदाह को जवाब दिया कि
“बादशाह में हमारे दस हिस्से हैं और हमारा हक़ भी दाऊद पर
तुम से ज़्यादा है तब तुमने क्यों हमारी हिक़ारत की, कि बादशाह
को लौटा लाने में पहले हमसे सलाह नहीं ली?” और बनी यहूदाह
की बातें बनी इस्राईल की बातों से ज़्यादा सख़्त थीं।

20

[illegible]

1 और वहाँ एक शरीर बिनयमीनी था और उसका नाम सबा'
बिन बिक्री था, उसने नरसिंगा फूँका और कहा कि “दाऊद में
हमारा कोई हिस्सा नहीं और न हमारी मीरास यस्सी के बेटे के
साथ है, ऐ इस्राईलियों अपने अपने डेरे को चले जाओ।”
2 इसलिए सब इस्राईली दाऊद की पैरवी छोड़ कर सबा'
बिन बिक्री के पीछे हो लिए लेकिन यहूदाह के लोग यरदन से
येरूशलेम तक अपने बादशाह के साथ ही रहे।
3 और दाऊद येरूशलेम में अपने महल में आया और बादशाह
ने अपनी उन दस बाँदियों को जिनको वह अपने घर की निगहबानी
के लिए छोड़ गया था, लेकर उनको नज़र बंद कर दिया और
उनकी परवरिश करता रहा लेकिन उनके पास न गया, इसलिए
उन्होंने अपने मरने के दिन तक नज़र बंद रहकर रंडापे की हालत
में ज़िन्दगी काटी।

4 और बादशाह ने 'अमासा को हुक्म किया कि "तीन दिन के
अन्दर बनी यहूदाह को मेरे पास जमा' कर और तू भी यहाँ हाज़िर
हो।"
5 तब 'अमासा बनी यहूदाह को बुलाने गया, लेकिन वह
मुताअय्यन वक़्त से जो उसने उसके लिए मुक़र्रर किया था ज़्यादा
ठहरा।
6 तब दाऊद ने अबीशै से कहा कि "सबा' बिन बिक्री तो
हमको अबीसलोम से ज़्यादा नुक़सान पहुँचायेगा फिर तू अपने
मालिक के ख़ादिमों को लेकर उसका पीछा कर ऐसा न हो कि वह
दीवारदार शहरों को लेकर हमारी नज़र से बच निकले।"
7 तब योआब के आदमी और करैती और फ़लेती और सब
बहादुर उसके पीछे हो लिए और येरूशलेम से निकले ताकि सबा'
बिन बिक्री का पीछा करें।
8 और जब वह उस बड़े पत्थर के नज़दीक पहुँचे जो जिब'ऊन
में है तो 'अमासा उनसे मिलने को आया और योआब अपना जंगी
लिबास पहने था और उसके ऊपर एक पटका था जिस से एक
तलवार मियान में पड़ी हुई उसके कमर में बंधी थी और उसके
चलते चलते वह निकल पड़ी।
9 तब योआब ने 'अमासा से कहा, "ऐ मेरे भाई तू ख़ैरियत से
है?" और योआब ने 'अमासा की दाढ़ी अपने दहने हाथ से पकड़ी
कि उसको बोसा दे।
10 और 'अमासा ने उस तलवार का जो योआब के हाथ में थी
ख़्याल न किया, इसलिए उसने उससे उसके पेट में ऐसा मारा कि
उसकी अंतड़ियाँ ज़मीन पर निकल पड़ीं और उसने दूसरा वार
न किया, इसलिए वह मर गया, फिर योआब और उसका भाई
अबीशै सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले।
11 और योआब के जवानों में से एक शख़्स उसके पास खड़ा हो
गया और कहने लगा कि "जो कोई योआब से राज़ी है और जो
कोई दाऊद की तरफ़ है वह योआब के पीछे होले।"

12 और 'अमासा सड़क के बीच अपने ख़ून में लोट रहा था और
उस शख़्स ने देखा कि सब लोग खड़े हो गये हैं, तो वह 'अमासा
को सड़क पर से मैदान को उठा ले गया और जब यह देखा कि जो
कोई उसके पास आता है खड़ा हो जाता है, तो उस पर एक कपड़ा
डाल दिया।
13 और जब वह सड़क पर से हटा लिया गया, तो सब लोग
योआब के पीछे सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले।
14 और वह इस्राईल के सब क़बीलों में से होता हुआ अबील
और बैत मा'का और सब बेरियों तक पहुँचा और वह भी जमा'
होकर उसके पीछे चले।
15 और उन्होंने आकर उसे अबील बैत मा'का में घेर लिया शहर
के सामने ऐसा दमदमा बाँधा कि वह दीवार के बराबर रहा और
सब लोगों ने जो योआब के साथ थे दीवार को तोड़ना शुरू' किया
ताकि उसे गिरा दें।
16 तब एक 'अक़्लमन्द 'औरत शहर में से पुकार कर कहने लगी
कि "ज़रा योआब से कह दो कि यहाँ आए ताकि मैं उससे कुछ
कहूँ।"
17 तब वह उसके नज़दीक आया, उस 'औरत ने उससे कहा,
"क्या तू योआब है?" उसने कहा, "हाँ" तब वह उससे कहने लगी,
"अपनी लौंडी की बातें सुन।" उसने कहा, "मैं सुनता हूँ।"
18 तब वह कहने लगी कि "पुराने ज़माना में यूँ कहा करते थे
कि वह ज़रूर अबील में सलाह पू छेंगे और इस तरह वह बात को
ख़त्म करते थे।
19 और मैं इस्राईल में उन लोगों में से हूँ जो सुलह पसंद और
दयानतदार हैं, तू चाहता है कि एक शहर और माँ को इस्राईलियों
के बीच हलाक करे, फिर तू क्यूँ ख़ुदावन्द की मीरास को निगलना
चाहता है?"
20 योआब ने जवाब दिया, "मुझसे हरगिज़ ऐसा न हो कि मैं

निगल जाऊँ या हलाक करूँ।
21 बात यह नहीं है बल्कि इफ़्राईम के पहाड़ी मुल्क के एक शख़्स
ने जिसका नाम सबा' बिन बिक्री है बादशाह या'नी दाऊद के
ख़िलाफ़ हाथ उठाया है इसलिए सिर्फ़ उसी को मेरे हवाले कर
देते तो मैं शहर से चला जाऊँगा।" उस 'औरत ने योआब से कहा,
"देख उसका सिर दीवार पर से तेरे पास फेंक दिया जाएगा।"
22 तब वह 'औरत अपनी दानाई से सब लोगों के पास गई,
फिर उसने सबा'बिन बिक्री का सिर काट कर उसे बाहर योआब
की तरफ़ फेंक दिया, तब उसने नरसिंगा फूँका और लोग शहर से
अलग होकर अपने अपने डेरे को चले गये और योआब येरूशलेम
को बादशाह के पास लौट आया।
23 और योआब इस्राईल के सारे लश्कर का सरदार था, और
बिनायाह बिन यहूयदा' करेतियों और फलेतियों का सरदार था।
24 और अदूराम ख़िराज का दरोग़ा था और अख़ीलूद का बेटा
यहूसफ़त मुवर्रिख़ था।
25 और सिवा मुन्शी था और सदूक़ और अबीयातर काहिन थे।
26 और 'ईरा याइरी भी दाऊद का एक काहिन था।

21

????? ?? ???'????????? ?? ????? ????? ?????

1 और दाऊद के दिनों में लगातार तीन साल काल पड़ा, और
दाऊद ने ख़ुदावन्द से दरियाफ़्त किया, ख़ुदावन्द ने फ़रमाया,
"यह साऊल और उसके ख़ूँरेज़ घराने की वजह से है, क्यूँकि उसने
जिब'ऊँनियों को क़त्ल किया।"
2 तब बादशाह ने जिब'ऊँनियों को बुलाकर उनसे बात की, यह
जिब'ऊनी बनी इस्राईल में से नहीं बल्कि बचे हुए अमूरियों में
से थे और बनी इस्राईल ने उनसे क़सम खाई थी और साऊल ने
बनी इस्राईल और बनी यहूदाह की ख़ातिर अपनी गरम जोशी में
उनको क़त्ल कर डालना चाहा था।

3 इसलिए दाऊद ने जिब'ऊनियों से कहा, “मैं तुम्हारे लिए
क्या करूँ और मैं किस चीज़ से कफ़्फ़ारा दूँ, ताकि तुम ख़ुदावन्द
की मीरास को दुआ दो?”
4 जिब'ऊनियों ने उससे कहा कि “हमारे और साऊल या उसके
घराने के दरमियान चाँदी या सोने का कोई मु'आमला नहीं और
न हमको यह इख़्तियार है कि हम इस्राईल के किसी आदमी को
जान से मारें।” उसने कहा, “जो कुछ तुम कहो मैं वही तुम्हारे लिए
करूँगा।”
5 उन्होंने बादशाह को जवाब दिया कि “जिस शख़्स ने हमारा
नास किया और हमारे ख़िलाफ़ ऐसी तदबीर निकाली कि हम मिटा
दिए जायें, और इस्राईल की किसी बादशाहत में बाक़ी न रहें।
6 उसी के बेटों में से सात आदमी हमारे हवाले कर दिए जायें,
और हम उनको ख़ुदावन्द के लिए चुने हुए साऊल के जिबा' में
लटका देंगे।” बादशाह ने कहा, “मैं दे दूँगा।”
7 लेकिन बादशाह ने मिफ़ीबोसत बिन यूनतन बिन साऊल को
ख़ुदावन्द की क़सम की वजह से जो उनके दाऊद और साऊल के
बेटे यूनतन के दरमियान हुई थी बचा रख्खा।
8 लेकिन बादशाह ने अय्याह की बेटी रिस्फ़ह के दोनों बेटों
अरमोनी और मिफ़ीबोसत को जो साऊल से हुए थे और साऊल
की बेटी मीकल के पाँचों बेटों को जो बरज़िल्ली महूलाती के बेटे
'अदरीएल से हुए थे लेकर।
9 उनको जिब'ऊनियों के हवाले किया और उन्होंने उनको पहाड़
पर ख़ुदावन्द के सामने लटका दिया, इसलिए वह सातों एक साथ
मारे, यह सब फ़सल काटने के दिनों में या'नी जौ की फ़सल के
शुरू' में मारे गये।
10 तब अय्याह की बेटी रिस्फ़ह ने टाट लिया और फ़सल
के शुरू' से उसको अपने लिए चट्टान पर बिछाए रही जब तक
आसमान से उन पर बारिश न हुई और उसने न तो दिन के वक़्त

हवा के परिन्दों को और न रात के वक़्त जंगली दरिन्दों को उन
पर आने दिया।
11 और दाऊद को बताया गया कि साऊल की बाँदी अय्याह
की बेटी रिस्फ़ह ने ऐसा ऐसा किया।
12 तब दाऊद ने जाकर साऊल की हड्डियों और उसके बेटे
यूनतन की हड्डियों को यबीस जिल'आद के लोगों से लिया जो
उनको बैत शान के चौक में से चुरा लाये थे, जहाँ फ़िलिस्तियों ने
उनको जिस दिन कि उन्होंने साऊल को जिलबू'आ में क़त्ल किया
टाँग दिया था।
13 इसलिए वह साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनतन की
हड्डियों को वहाँ से ले आया, और उन्होंने उनकी भी हड्डियाँ जमा'
कीं जो लटकाए गये थे।
14 और उन्होंने साऊल और उसके बेटे यूनतन की हड्डियों को
जिला' में जो बिनयमीन की सर ज़मीन में है उसी के बाप क़ैस की
क़ब्र में दफ़न किया और उन्होंने जो कुछ बादशाह ने फ़रमाया था
सब पूरा किया, इसके बाद ख़ुदा ने उस मुल्क के बारे में दुआ सुनी।
15 और फ़िलिस्ती फिर इस्राईलियों से लड़े और दाऊद अपने
ख़ादिमों के साथ निकला और फ़िलिस्तियों से लड़ा और दाऊद
बहुत थक गया।
16 और इश्बी बनोब ने जो देवज़ादों में से था और जिसका नेज़ह
वज़न में पीतल की तीन सौ मिस्क़ाल था और वह एक नई तलवार
बाँधे था चाहा कि दाऊद को क़त्ल करे।
17 लेकिन ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने उसकी मदद की और उस
फ़िलिस्ती को ऐसी मार लगाई कि उसे मार दिया, तब दाऊद के
लोगों ने क़सम खाकर उससे कहा कि “तू फिर कभी हमारे साथ
जंग पर नहीं जाएगा ऐसा न हो कि तू इस्राईल का चराग़ बुझादे।”
18 इसके बाद फ़िलिस्तियों के साथ जूब में लड़ाई हुई, तब
हूसाती सिब्बकी ने सफ़ को जो देवज़ादों में से था क़त्ल किया।
19 और फिर फ़िलिस्तियों से जूब में एक और लड़ाई हुई,

तब इल्हनान बिन या'अरी अरजीम ने जो बैतुल-हम का था
जाती जोलियत को क़त्ल किया जिसके नेज़ह की छड़ जुलाहे
के शहतीर की तरह थी।
20 फिर जात में लड़ाई हुई और वहाँ एक बड़ा लम्बा शख़्स था,
उसके दोनों हाथों और दोनों पावों में छ: छ: उंगलियाँ थीं जो
सब की सब गिनती में चौबीस थीं और यह भी उस देव से पैदा
हुआ था।
21 जब इसने इस्राईलियों की फ़ज़ीहत की तो दाऊद के भाई
सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे क़त्ल किया।
22 यह चारों उस देव से जात में पैदा हुए थे, और वह दाऊद के
हाथ से और उसके ख़ादिमों के हाथ से मारे गये।

22

[illegible]

1 जब ख़ुदावन्द ने दाऊद को उसके सब दुश्मनों और साऊल
के हाथ से रिहाई दी तो उसने ख़ुदावन्द के सामने इस मज़मून का
हम्द सुनाया।
2 वह कहने लगा, ख़ुदावन्द मेरी चट्टान और मेरा किला' और
मेरा छुड़ाने वाला है।
3 ख़ुदा मेरी चट्टान है, मैं उसी पर भरोसा रक्खूँगा, वही मेरी
ढाल और मेरी नजात का सींग है, मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरी पनाह
है, मेरे नजात देने वाले! तूही मुझे ज़ुल्म से बचाता है।
4 मैं ख़ुदावन्द को जो ता'रीफ़ के लायक़ है पुकारूँगा, यूँ मैं अपने
दुश्मनों से बचाया जाऊँगा।
5 क्यूँकि मौत की मौजों ने मुझे घेरा, बेदीनी के सैलाबों ने मुझे
डराया।
6 पाताल की रस्सियाँ मेरे चारो तरफ़ थीं मौत के फंदे मुझ पर
आते थे।

7 अपनी मुसीबत में मैंने ख़ुदावन्द को पुकारा, मैं अपने ख़ुदा
के सामने चिल्लाया। उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज़ सुनी
और मेरी फ़रयाद उसके कान में पहुँची।
8 तब ज़मीन हिल गई और काँप उठी और आसमान की
बुनियादों ने जुम्बिश खाई और हिल गयीं, इसलिए कि वह ग़ुस्सा
हुआ।
9 उसके नथुनों से धुवाँ उठा और उसके मुँह से आग निकल कर
भस्म करने लगी, कोयले उससे दहक उठे।
10 उसने आसमानों को भी झुका दिया और नीचे उतर आया
और उसके पाँव तले गहरा अँधेरा था।
11 वह करूबी पर सवार होकर उदा और हवा के बाज़ुओं पर
दिखाई दिया।
12 और उसने अपने चारों तरफ़ अँधेरे को और पानी के
इज्तिमा'और आसमान के दलदार बादलों को शामियाने बनाया।
13 उस झलक से जो उसके आगे आगे थी आग के कोयले सुलग
गये।
14 ख़ुदावन्द आसमान से गरजा और हक़ त'आला ने अपनी
आवाज़ सुनाई।
15 उसने तीर चला कर उनको तितर बितर किया, और बिजली
से उनको शिकस्त दी।
16 तब ख़ुदावन्द की डॉट से; उसके नथुनों के दम के झोंके से,
समुन्दर की गहराई दिखाई देने लगी, और जहान की बुनियादें
नमूदार हुई।
17 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे बहुत
पानी में से खींच कर बाहर निकाला।
18 उसने मेरे ताक़तवर दुश्मन और मेरे 'अदावत रखने वालों
से, मुझे छुड़ा लिया क्यूँकि वह मेरे लिए निहायत बहादुर थे।
19 वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े, पर ख़ुदावन्द मेरा
सहारा था।

20 वह मुझे चौड़ी जगह में निकाल भी लाया, उसने मुझे
छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझसे ख़ुश था।
21 ख़ुदावन्द ने मेरी रास्तबाज़ी के मुवाफ़िक़ मुझे बदला दिया,
और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक़ मुझे बदला दिया।
22 क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द की राहों पर चलता रहा, और ग़ल्ती से
अपने ख़ुदा से अलग न हुआ।
23 क्यूँकि उसके सारे फ़ैसले मेरे सामने थे, और मैं उसके क़ानून
से अलग न हुआ।
24 मैं उसके सामने कामिल भी रहा, और अपनी बदकारी से
बा'ज़ रहा।
25 इसीलिए ख़ुदावन्द ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी के मुवाफ़िक़
बल्कि मेरी उस पाकीज़गी के मुताबिक़ जो उसकी नज़र के सामने
थी बदला दिया।
26 रहम दिल के साथ तू रहीम होगा, और कामिल आदमी के
साथ कामिल।
27 नेकों के साथ नेक होगा, और टेढों के साथ टेढ़ा।
28 मुसीबत ज़दा लोगों को तू बचाएगा, लेकिन तेरी आँखें
मग़रूरों पर लगी हैं ताकि तू उन्हें नीचा करे।
29 क्यूँकि ऐ ख़ुदावन्द! तू मेरा चराग़ है, और ख़ुदावन्द मेरे
अँधेरे को उजाला कर देगा।
30 क्यूँकि तेरी बदौलत मैं फ़ौज पर जंग करता हूँ, और अपने
ख़ुदा की बदौलत दीवार फाँद जाता हूँ।
31 लेकिन ख़ुदा की राह कामिल है, ख़ुदावन्द का कलाम ताया
हुआ है, वह उन सबकी ढाल है जो उसपर भरोसा रखते हैं।
32 क्यूँकि ख़ुदावन्द के 'अलावा और कौन ख़ुदा है? और हमारे
ख़ुदा को छोड़ कर और कौन चटटान है?
33 ख़ुदा मेरा मज़बूत किला' है, वह अपनी राह में कामिल
शख़्स की रहनुमाई करता है।

34 वह उसके पाँव हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची
जगहों में क़ाईम करता है।
35 वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है, यहाँ तक कि मेरे
बाज़ू पीतल की कमान को झुका देते हैं।
36 तूने मुझको अपनी नजात की ढाल भी बख़्शी, और तेरी
नरमी ने मुझे बुज़ुर्ग बना दिया।
37 तूने मेरे नीचे मेरे क़दम चौड़े कर दिए, और मेरे पाँव नहीं
फिसले।
38 मैंने अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको हलाक किया, और
जब तक वह फ़ना न हो गये मैं वापस नहीं आया।
39 मैंने उनको फ़ना कर दिया और ऐसा छेद डाला है कि वह
उठ नहीं सकते, बल्कि वह तो मेरे पाँव के नीचे गिरे पड़े हैं।
40 क्यूँकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताक़त से तैयार किया, और
मेरे मुख़ालिफ़ों को मेरे सामने नीचा किया।
41 तूने मेरे दुश्मनों की पीठ मेरी तरफ़ फेरदी, ताकि मैं अपने
'अदावत रखने वालों को काट डालूँ।
42 उन्होंने इन्तिज़ार किया लेकिन कोई न था जो बचाए, बल्कि
ख़ुदावन्द का भी इन्तिज़ार किया, लेकिन उसने उनको जवाब न
दिया।
43 तब मैंने उनको कूट कूट कर ज़मीन की गर्द की तरह कर
दिया, मैंने उनको गली कूचों के कीचड़ की तरह रौंद कर चारो
तरफ़ फैला दिया।
44 तूने मुझे मेरी क़ौम के झगड़ों से भी छुड़ाया, तूने मुझे क़ौमों
का सरदार होने के लिए रख छोड़ा है, जिस क़ौम से मैं वाक़िफ़ भी
नहीं वह मेरी फ़रमा बरदार होगी।
45 परदेसी मेरे ताबे' हो जायेंगे, वह मेरा नाम सुनते ही मेरी
फ़रमाबर्दारी करेंगे।
46 परदेसी मुरझा जायेंगे और अपने किलों'से थरथराते हुए
निकलेंगे।

47 ख़ुदावन्द ज़िन्दा है, मेरी चटटान मुबारक हो! और ख़ुदा मेरे
नजात की चटटान मुम्ताज़ हो!
48 वही ख़ुदा जो मेरा बदला लेता है, और उम्मतों को मेरे ताबे'
कर देता है।
49 और मुझे मेरे दुश्मनों के बीच से निकालता है, हाँ तू मुझे
मेरे मुख़ालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता है, तू मुझे टेढ़े आदमियों से
रिहाई देता है।
50 इसलिए ऐ ख़ुदावन्द! मैं क़ौमों के बीच तेरी शुक्रगुज़ारी
और तेरे नाम की मदह सराई करूँगा।
51 वह अपने बादशाह को बड़ी नजात 'इनायत करता है, और
अपने ममसूह दाऊद और उसकी नसल पर हमेशा शफ़क़त करता
है।

23

[illegible]

1 दाऊद की आख़री बातें यह हैं: दाऊद बिन यस्सी कहता है,
या'नी यह उस शख़्स का कलाम है जो सरफ़राज़ किया गया, और
या'क़ूब के ख़ुदा का ममसूह और इस्राईल का शीरीं नग़मा साज़
है।
2 "ख़ुदावन्द की रूह ने मेरी ज़रिए' कलाम किया, और उसका
सुख़न मेरी ज़बान पर था।
3 इस्राईल के ख़ुदा ने फ़रमाया। इस्राईल की चटटान ने मुझसे
कहा। एक है जो सच्चाई से लोगों पर हुकूमत करता है। जो ख़ुदा
के खौफ़ के साथ हुकूमत करता है।
4 वह सुबह की रोशनी की तरह होगा जब सूरज निकलता है,
ऐसी सुबह जिसमें बादल न हो, जब नरम नरम घास ज़मीन में से,
बारिश के बाद की साफ़ चमक के ज़रिए' निकलती है।

5 मेरा घर तो सच मुच ख़ुदा के सामने ऐसा है भी नहीं, तो भी
उसने मेरे साथ एक हमेशा का 'अहद, जिसकी सब बातें मु'अय्यन
और पाएदार हैं बाँधा है, क्यूँकि यही मेरी सारी नजात और सारी
मुराद है, अगरचे वह उसको बढ़ाता नहीं।
6 लेकिन झूठे लोग सब के सब काँटों की तरह ठहरेंगे जो हटा
दिए जाते हैं, क्यूँकि वह हाथ से पकड़े नहीं जा सकते।
7 बल्कि जो आदमी उनको छुए, ज़रूर है कि वह लोहे और
नेज़ह की छड़ से मुसल्लह हो, इसलिए वह अपनी ही जगह में
आग से बिल्कुल भस्म कर दिए जायेंगे।
8 और दाऊद के बहादुरों के नाम यह हैं: या'नी तहकमोनी
योशेब बशेबत जो सिपह सालार का सरदार था, वही ऐज़नी
अदीनो था जिससे आठ सौ एक ही वक़्त में मक़तूल हुए।
9 उसके बाद एक अख़ूही के बेटे दोदे का बेटा एलियाज़र था,
यह उन तीनों सूरमाओं में से एक था जो दाऊद के साथ उस वक़्त
थे, जब उन्होंने उन फ़िलिस्तियों को जो लड़ाई के लिए जमा' हुए
थे लल्कारा हालाँकि सब बनी इस्राईल चले गये थे।
10 और उसने उठकर फ़िलिस्तियों को इतना मारा कि उसका
हाथ थक कर तलवार से चिपक गया और ख़ुदावन्द ने उस दिन
बड़ी फ़तह कराई और लोग फिर कर सिर्फ़ लूटने के लिए उसके
पीछे हो लिए।
11 बाद उसके हरारी अजी का बेटा सम्मा था और फ़िलिस्तियों
ने उस क़त — ए — ज़मीन के पास जो मसूर के पेड़ों से भरा था
जमा' होकर दिल बाँध लिया था और लोग फ़िलिस्तियों के आगे
से भाग गये थे।
12 लेकिन उसने उस क़ता' के बीच में खड़े होकर उसको बचाया
और फ़िलिस्तियों को क़त्ल किया और ख़ुदावन्द ने बड़ी फ़तह
कराई।
13 और उन तीस सरदारों में से तीन सरदार निकले और फ़सल
काटने के मौसम में दाऊद के पास 'अदूल्लाम के मग़ारा में आए

और फ़िलिस्तियों की फ़ौज रिफ़ाईम की वादी में ख़ेमा ज़न थी।
14 और दाऊद उस वक़्त गढ़ी में था और फ़िलिस्तियों के पहरे
की चौकी बैतल हम में थी।
15 और दाऊद ने तरसते हुए कहा, ऐ काश कोई मुझे बैतल हम
के उस कुँवें का पानी पीने को देता जो फाटक के पास है।
16 और उन तीनों बहादुरों ने फ़िलिस्तियों के लश्कर में से जाकर
बैतल हम के कुँवें से जो फाटक के बराबर है पानी भर लिया और
उसे दाऊद के पास लाये लेकिन उसने न चाहा कि पिए बल्कि उसे
ख़ुदावन्द के सामने उंडेल दिया।
17 और कहने लगा, ऐ ख़ुदावन्द मुझसे यह बात हरगिज़ न हो
कि मैं ऐसा करूँ, क्या मैं उन लोगों का ख़ून पियूँ जिन्होंने अपनी
जान जोखों में डाली?" इसी लिए उसने न चाहा कि उसे पिए,
उन तीनों बहादुरों ने ऐसे ऐसे काम किए।
18 और ज़रोयाह के बेटे योआब का भाई अबीशै उन तीनों में
अफ़ज़ल था, उसने तीन सौ पर अपना भाला चला कर उनको
क़त्ल किया और तीनों में नामी था।
19 क्या वह उन तीनों में ख़ास न था? इसीलिए वह उनका
सरदार हुआ तो भी वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया।
20 और यहूयदा' का बेटा बिनायाह क़बजील के एक सूरमा का
बेटा था, जिसने बड़े बड़े काम किए थे, इसने मोआब के अरीऐल
के दोनों बेटों को क़त्ल किया और जाकर बर्फ़ के मौसम में एक
ग़ार के बीच एक शेर बबर को मारा।
21 और उसने एक जसीम मिस्री को क़त्ल किया, उस मिस्री के
हाथ में भला था लेकिन यह लाठी ही लिए हुए उस पर लपका
और मिस्री के हाथ से भला छीन लिया और उसी के भाले से उसे
मारा।
22 तब यहूयदा' के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किए और
तीनों बहादुरों में नामी था।
23 वह उन तीसों से ज़्यादा ख़ास था लेकिन वह उन पहले तीनों

के बराबर नहीं होने पाया और दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़
सिपाहियों पर मुक़र्रर किया।
24 और तीसों में योआब का भाई 'असाहील और इल्हनान
बैतल हम के दोदो का बेटा।
25 हरोदी सम्मा, हरोदी इलिका।
26 फ़लती ख़लिस, 'ईरा बिन 'अक़ीस तक़ू'अ।
27 अन्तोती अबी'अज़र, हूसाती मबूनी।
28 अख़ूही ज़ल्मोन, नतोफ़ाती महरी।
29 नतोफ़ाती बा'ना के बेटा हलिब, इती बिन रीबी बनी
बिनयमीन के जिब्बा'का।
30 फिर'आतोनी, बिनायाह, और जा'स के नालों कब हिद्दी।
31 'अरबाती अबी 'अल्बून, बर्हूमी 'अज़मावत।
32 सा'लाबूनी इलीयाब, बनी यासीन यूनतन।
33 हरारी सम्मा, अख़ीआम बिन सरार हरारी।
34 इलिफ़ालत बिन अहसबी मा'काती का बेटा, इलीआम बिन
अख़ीतुफ्फ़ल जिलोनी।
35 कर्मिली हसरो, अरबी फ़ा'री।
36 ज़ोबाह के नातन का बेटा इजाल, जद्दी बानी।
37 'अम्मोनी सिलक़, बैरोती नहरी, ज़रोयाह के बेटे योआब के
सिलहबरदार।
38 इतरी 'ईरा, इतरी जरीब।
39 और हित्ती ऊरिय्याह: यह सब सैंतीस थे।

24

[illegible]

1 इसके बाद ख़ुदावन्द का ग़ुस्सा इस्राईल पर फिर भड़का और
उसने दाऊद के दिल को उनके ख़िलाफ़ यह कहकर उभारा कि
“जाकर इस्राईल और यहूदाह को गिन।”

2 और बादशाह ने लश्कर के सरदार योआब को जो उसके साथ
था हुक्म किया कि "इस्राईल के सब क़बीलों में दान से बेर सबा'
तक गश्त करो और लोगों को गिनो ताकि लोगों की ता'दाद मुझे
मा'लूम हो।"
3 तब योआब ने बादशाह से कहा कि "ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उन
लोगों को चाहे वह कितने ही हों सौ गुना बढ़ाए और मेरे मालिक
बादशाह की आँखें इसे देखें, लेकिन मेरे मालिक बादशाह को यह
बात क्यों भाती है?"
4 तो भी बादशाह की बात योआब और लश्कर के सरदारों पर
ग़ालिब ही रही, और योआब और लश्कर के सरदार बादशाह के
सामने से इस्राईल के लोगों का शुमार करने निकले।
5 और वह यरदन पार उतरे और उस शहर की दहनी तरफ़
'अरो'ईर में ख़ेमाज़न हुए जो जद की वादी में या'ज़ेर की जानिब
है।
6 फिर जिल'आद और तहतीम हदसी के 'इलाक़े में गए, और
दान या'न को गए, और घूम कर सैदा तक पहुँचे।
7 और वहाँ से सूर के क़िला' को और हव्वियों और कन'आनियों
के सब शहरों को गए और यहूदाह के जुनूब में बेरसबा' तक निकल
गए।
8 चुनाँचे सारी हुकूमत में गश्त करके नौ महीने बीस दिन के
बाद वह येरूशलेम को लौटे।
9 और योआब ने मर्दुम शुमारी की ता'दाद बादशाह को दी वह
इस्राईल में आठ लाख बहादुर मर्द निकले जो शमशीर ज़न थे और
यहूदाह में आदमी पाँच लाख निकले।
10 और लोगों का शुमार करने के बाद दाऊद का दिल बेचैन
हुआ और दाऊद ने ख़ुदावन्द से कहा, "यह जो मैंने किया वह
बड़ा गुनाह किया, अब ऐ ख़ुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि
तू अपने बन्दा का गुनाह दूर कर दे क्यूँकि मुझसे बड़ी बेवक़ूफ़ी

हुई।"

11 इसलिए जब दाऊद सुबह को उठा तो ख़ुदावन्द का कलाम
जाद पर जो दाऊद का ग़ैब बीन था नाज़िल हुआ और उसने कहा
कि।

12 "जा और दाऊद से कह ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि मैं तेरे
सामने तीन बलाएँ पेश करता हूँ, तू उनमें से एक को चुन ले ताकि
मैं उसे तुझ पर नाज़िल करूँ।"

13 तब जाद ने दाऊद के पास जाकर उसको यह बताया और
उस से पुछा, "क्या तेरे मुल्क में सात बरस क़हत रहे या तू तीन
महीने तक अपने दुश्मनों से भागता फिरे और वह तेरा पीछा करें
या तेरी हुकूमत में तीन दिन तक मौतें हों? इसलिए तू सोच ले
और ग़ौर कर ले कि मैं उसे जिसने मुझे भेजा ने क्या जवाब दूँ।"

14 दाऊद ने जाद से कहा, "मैं बड़े शिकंजे में हूँ, हम ख़ुदावन्द
के हाथ में पड़ें क्यूँकि उसकी रहमतें 'अज़ीम हैं लेकिन मैं इंसान
के हाथ में न पड़ूँ।"

15 तब ख़ुदावन्द ने इस्राईल पर वबा भेजी जो उस सुबह से
लेकर वक़्त मु'अय्यना तक रही और दान से बेर सबा' तक लोगों
मेंसे सत्तर हज़ार आदमी मर गए।

16 और जब फ़रिश्ते ने अपना हाथ बढ़ाया कि येरूशलेम को
हलाक करे तो ख़ुदावन्द उस वबा से मलूल हुआ और उस फ़रिश्ते
से जो लोगों को हलाक कर रहा था कहा, "यह बस है, अब अपना
हाथ रोक ले।" उस वक़्त ख़ुदावन्द का फ़रिश्ता यबूसी अरोनाह
के खलिहान के पास खड़ा था।

17 और दाऊद ने जब उस फ़रिश्ता को जो लोगों को मार रहा
था देखा तो ख़ुदावन्द से कहने लगा, "देख गुनाह तो मैंने किया
और ख़ता मुझसे हुई लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? इसलिए
तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के ख़िलाफ़ हो।"

18 उसी दिन जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, "जा और

यबूसी अरोनाह के खलिहान में ख़ुदावन्द के लिए एक मज़बह
बना।"
19 इसलिए दाऊद जाद के कहने के मुताबिक़ जैसा ख़ुदावन्द
का हुक्म था गया।
20 और अरोनाह ने निगाह की और बादशाह और उसके
ख़ादिमों को अपनी तरफ़ आते देखा, तब अरोनाह निकला और
ज़मीन पर सरनगूँ होकर बादशाह के आगे सज्दा किया।
21 और अरोनाह कहने लगा, "मेरा मालिक बादशाह अपने
बन्दा के पास क्यों आया?" दाऊद ने कहा, "यह खलिहान तुझसे
ख़रीदने और ख़ुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाने आया हूँ ताकि
लोगों में से वबा जाती रहे।"
22 अरोनाह ने दाऊद से कहा, मेरा मालिक बादशाह जो कुछ
उसे अच्छा मा'लूम हो लेकर पेश करे, देख सोख़्तनी क़ुर्बानी के
लिए बैल हैं और दायें चलाने के औज़ार और बैलों का सामान
ईधन के लिए हैं।
23 यह सब कुछ ऐ बादशाह अरोनाह बादशाह की नज़र करता
है। और अरोनाह ने बादशाह से कहा कि "ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
तुझको क़ुबूल फ़रमाए।"
24 तब बादशाह ने अरोनाह से कहा, "नहीं बल्कि मैं ज़रूर
क़ीमत देकर उसको तुझसे ख़रीदूँगा और मैं ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
के सामने ऐसी सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ अदा करूँगा जिन पर मेरा कुछ
ख़र्च न हुआ हो" फिर दाऊद ने वह खलिहान और वह बैल चाँदी
के पचास मिस्क़ालें देकर ख़रीदे।
25 और दाऊद ने वहाँ ख़ुदावन्द के लिए मज़बह बनाया और
सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और सलामती की क़ुर्बानियाँ पेश कीं और
ख़ुदावन्द ने उस मुल्क के बारे में दुआ सुनी और वबा इस्राईल
में से जाती रही।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc